सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

फरवरी, 2018 वर्ष 16 अंक 12

काम की बातें

होए राज़ी खुदा काम ऐसे करो
होए सब का भला फिक्र इसकी करो
यतीमों गरीबों की खिदमत करो
बड़े बूढ़ों की ख़ूब इज़्ज़त करो
हुनर सीख कर तुम तरक़्क़ी करो
करो काम जो उस में मेहनत करो
नशे से रहे तुम को नफरत सदा
सिहत के लिए रोज़ वर्ज़िश करो
रहे गन्दगी से सदा तुम को नफरत
तुम ये कोशिश करो साफ़ सुथरे रहो
ख़ुदा जो भी दे उसको खाओ पियो
न भूलो उसे शुक्र उसका करो

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
सम्मिलित परिवार और परदा	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	17
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	20
एक संगीन मर्ज को दूर करने	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	22
विश्व (काइनात) में सिर्फ एक पृथ्वी	डॉ0 मुहम्मद याकूब हुसैन खालिदी	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
हिन्द का दस्तूर	इदारा	30
जल्दबाजी कुर्आन व हदीस	मुहम्मद अब्दुल्लाह शमीम नदवी	31
अल्लाह वाले (पद्य)	इदारा	34
कुर्आन व हदीस में क़ियामत तक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	36
दअ़वत का काम करने वालों के लिए	मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	37
शहद (मधु)	हुसैन अहमद	39
हक़ीम मौलाना अब्दुल्लतीफ सा0 रह0	जमाल अहमद नदवी	40
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद—

उन की अधिकतर काना फूसियों में भलाई नहीं है हां कोई सद्क़ा (ख़ैरात) की बात कहे और जो भी अल्लाह की खुशी चाहते हुए ऐसा करेगा तो हम आगे उसको बड़े बदले से सम्मानित करेंगे[1](114) और जो सही रास्ता सामने आ जाने के बाद भी पैगम्बर का विरोध करेगा और ईमान वालों के रास्ते से हट कर चलेगा तो वह जिधर भी मुंह करेगा उसी दिशा पर हम उसको डाल देंगे और उस को दोज़ख में पहुंचा देंगे और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है[2](115) अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ साझीदार बनाया जाए और इसके अलावा जिस को चाहेगा माफ़ कर देगा और जिसने अल्लाह के साथ साझी ठहराया बेशक वह दूर जा भटका[3](116) अल्लाह को छोड़ कर बस वे औरतों (देवियों) को पुकारते हैं और वे तो बस सरकश शैतान की ही दोहाई देते हैं(117) जिस पर अल्लाह ने फिटकार की और उसने कहा कि मैं तेरे बन्दों में निर्धारित हिस्सा लेकर रहूंगा(118) और मैं उनको ज़रूर गुमराह करूंगा और उनको कामनाओं में रखूंगा और उनको सिखा दूंगा तो वे ज़रूर जानवरों के कान काटेंगे और उनको सिखा कर रहूंगा तो वे ज़रूर अल्लाह के बनाए रूप को बदलेंगे और जो अल्लाह के अलावा शैतान को अपना दोस्त बनाएगा उसने खुला नुक़सान उठाया(119) वह उनसे जो भी वादा करता है सब धोखा है(120) यही लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख है और वे उससे छुटकारे का कोई रास्ता न पा सकेंगे[4](121) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनको हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी उन्हीं में हमेशा के लिए रह पड़ेंगे, अल्लाह का सच्चा वादा है और अल्लाह से बढ़ कर सच्ची बात कहने वाला और कौन हो सकता है[5](122) न तुम्हारी कामनाओं से कुछ होगा और न अहले किताब की कामनाओं से कुछ हुआ है जो भी बुराई करेगा उसकी सज़ा पाएगा और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा किसी को समर्थक और मददगार न पा सकेगा[6](123) और जो व्यक्ति भी भले काम करेगा वह मर्द हो या औरत इस शर्त के साथ कि वह ईमान वाला हो तो वे लोग जन्नत में दाखिल किए जाएंगे और रत्ती भर भी उनके साथ अन्याय न होगा(124) और उससे अच्छा दीन किस का

हो सकता है जो अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे और वह अच्छे काम करने वाला हो और वह एकाग्र हो कर इब्राहीमी मिल्लत की पैरवी करे[7] और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना चहीता बनाया है(125) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है वह सब अल्लाह का है और हर चीज़ अल्लाह के घेरे में है(126) और वे औरतों के बारे में आप से आदेश पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में अनुमति देता है और किताब में जिन अनाथ लड़कियों के बारे में जो तुम्हें बताया जाता रहा है यह वे हैं जिनको तुम उनका अधिकार नहीं देते और उनसे तुम निकाह करना चाहते हो और कमज़ोर हाल बच्चों के बारे में (तुम्हें भलाई की ताकीद की गई है) और यह कि तुम अनाथों के लिए न्याय पर कायम रहो और तुम भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उसको जानता ही है[8](127)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. मुनाफिक़ों का यह काम था कि वे आपस में बेहूदा काना फूसियां किया करते थे, किसी की पीठ पीछे बुराई, किसी की कमी निकालना, किसी की शिकायत करना।

2. आयत से दो बातें मालूम हुईं, एक तो यह कि जो ग़लत रास्ते पर पड़ कर उसको सही समझता है और सच की तलाश नहीं करता वह गुमराही में पड़ता जाता है, दूसरी यह कि ईमान वालों के रास्ते को छोड़ना रास्ता भटकना है, फ़क़ीहों (इस्लामी विधि शास्त्रियों) ने इसी से फ़िक़्ह (इस्लामी विधि शास्त्र) के एक नियम ''इज्मा'' के लिए तर्क निकाला है।

3. जब बात साफ़ हो गई तो बजाए इसके कि चोर तौबा करता वह हाथ कटने के डर से मक्के जा कर मुश्रिकों से मिल गया, पहले माफ़ी की संभावना थी अब समाप्त हो गई, शिर्क ऐसी चीज़ है कि वह बिना तौबा के माफ़ होती ही नहीं।

4. मुश्रिकों ने मूर्तियां बना रखी थीं जिनको महिलाओं के नाम दे रखे थे जैसे उज़्ज़ा, लात, मनात आदि, उनको पूजते थे और वास्तव में शैतान को पूजते थे, जिसने बहका कर मूर्ति पूजा में लगाया, जो पहले दिन से इंसान का दुश्मन है और उसने अल्लाह से कहा कि मैं तेरे बन्दों को बहका कर रहूंगा, उनको लालच दूंगा, वादा करूंगा और सब गलत काम करवाऊँगा, उस समय रिवाज था कि मूर्ति के नाम पर जानवर का बच्चा छोड़ते तो उसके कान का एक भाग काट देते या छेद कर देते, अपने शरीर को गोदवाते और उसमें अपने माबूदों के नाम भरवाते, जब शैतान की सारी दुश्मनियां मालूम हो गईं फिर उसके बाद उसकी बात मानना अपने आप को दोज़ख के रास्ते पर डालना है, जिससे बचाव का कोई उपाय नहीं।

5. जो शैतान की चालों से बचे और उन्होंने अल्लाह को माना और अच्छे काम किये, उनके लिए जन्नतें हैं, यह अल्लाह का वादा है, और उससे बढ़ कर सच्ची बात किस की हो सकती है।

शेष पृष्ठ....19 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

कुछ सर मुंडाने और कुछ छोड़ देने की मुमानियतः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कजअ़ (अर्थात सर के बालों को कहीं मूंडना और कहीं छोड़ने को कजअ़ कहते हैं) से मना फरमाया है।

(बुखारी मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लड़के को देखा जिस का आधा सर मुंडा था और आधे में बाल थे आपने इस से मना फरमाया, और फरमाया या तो तमाम बाल मुंडवा दो या बिल्कुल न मुंडावो।

(अबू दाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जाफर रज़ि0 की शहादत के बाद तीन दिन आले जाफर को छोड़ रखा (यानी उनको रंज से मना नहीं फरमाया) तीन दिन बाद आप तशरीफ लाये और फरमाया अब मेरे भाई पर न रोना (हज़रत जाफर रज़ि0 हुजूर सल्ल0 के चचेरे भाई थे) फिर फरमाया मेरे भतीजों को लाओ, पस हम लोग लाये गये, गोया हम चूज़े थे, आपने नाई को बुलवाया और हमारे सरों को मूंडने का आदेश दिया।

(अबू दाऊद)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरत को सर मुंडाने से मना फरमाया है।

(नसई शरीफ)

बाल में बाल मिलाने और गोदने और दांतों को तेज करने की मुमानियतः–

अनुवादः पस यह तो सिवा अल्लाह के औरतों ही को पुकारते हैं और यह सिर्फ शैतान सरकश ही की इबादत करते हैं जिस पर अल्लाह ने लानत की है और वह बोला मैं तेरे बंदों से जरूर उनका मुकर्रह हिस्सा लिया करूंगा और मैं उनको ज़रूर गुमराह करूंगा, उनको उम्मीदें दिलाऊंगा, उनको तालीम दूंगा तो वह जानवरों के कान चीरा करेंगे और उनको तालीम दूंगा तो वह अल्लाह की बनाई सूरत में जरूर तब्दीली करेंगे, जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाये, वह खुले हुए नुकसान में आ गया, वह उन से वादे करता है उम्मीदें दिलाता है और शैतान जो कुछ उन से वादे करता है वह तो बस खालिस धोका है। (सूरः निसा–8)

हज़रत अस्मा रज़ि0 से रिवायत है कि एक औरत ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से अर्ज किया, या रसूलुल्लाह मेरी बेटी के बाल बीमारी की वजह से झड़ गये हैं और मैं उसकी शादी करने वाली हूं तो क्या मैं दूसरे का बाल लगा कर उसके बाल बढ़ा दूं, आपने फरमाया कि अल्लाह तआला ने बाल जोड़ कर बढ़ाने और बढ़वाने वाली पर लानत फरमाई है।

(बुखारी–मुस्लिम)

इसी प्रकार हज़रत आयशा रज़ि0 से भी रिवायत है। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत हमीद बिन अब्दुर्रहमान रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने हज के साल मिम्बर पर हज़रत मुआविया रज़ि0 से सुना है बालों का एक गुच्छा जो उनके पहरेदार सिपाही के हाथ में था, अपने हाथ में लिया और कहने लगा ऐ मदीना वालो तुम्हारे उलमा कहां हैं (अर्थात तुम्हारे उलमा को क्या हुआ ऐसे कामों से रोकते नहीं) मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फरमाते थे बनी इस्राईल तब ही हलाक हुए जब उनकी औरतों ने यह वतीरा (स्वभाव) इख्तियार किया।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाल जोड़ कर बढ़ाने वाली और बढ़वाने वाली, गोदने वाली और गोदवाने वाली पर लानत फरमाई है।

(बुखारी–मुस्लिम

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने गोदना, गोदने वालियों और गोदवाने वालियों और बाल उखाड़ने वालियों और दातों को रेत कर पतला करने वालियों पर जो हुस्न बढ़ाने की खातिर करती हैं अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों में तब्दीली करती हैं उन पर लानत की, तो एक औरत ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से इस बारे में बहस की, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 ने कहा मैं उस पर क्यों न लानत भेजूं जिस पर हुजूर ने लानत की है। कुर्आने पाक में तो मौजूद है।

अनुवादः जो तुम को रसूल दें उसको ले लो और जिन से मना करें उस से बाज रहो।

(बुखारी–मुस्लिम)

सफेद बाल उखाड़ने की मुमानियतः-

हज़रत अम्र बिन शुऐब रज़ि0 से रिवायत है कि वह अपने बाप से, वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि आपने फरमाया सफेद बाल न उखाड़ो यह कयामत में मुसलमानों के लिए नूर होंगे। (अबूदाऊद–तिर्मिजी)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने कोई ऐसा अमल किया जो हमारी शरीअत में नहीं है वह रद्द है। (मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

सम्मिलित परिवार और परदा

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सम्मिलित परिवारः–

सम्मिलित परिवार वह परिवार कहलाता है जिस में एक ही घर के एक से अधिक विवाहित लोग रहते और एक ही रसोई से खान–पान करते हों, उदाहरण के तौर पर समझये कि एक व्यक्ति है उसकी पत्नी है उसके दो बेटे और एक बेटी जवान हो गये उनकी शादियां हो गईं लड़की तो अपनी ससुराल में रहने लगी मगर दोनों बेटे अपनी अपनी पत्नियों के साथ उसी घर में रह रहे हैं, फिर दोनों बेटों के दो दो बेटे और एक एक बेटी पैदा हो कर जवान हो गये शादियां हुईं चार पोतों की बीवियां आ गईं सब का उसी घर में रहने का प्रबन्ध हुआ, चचेरी बहनें भी जवान हो कर अपने चचेरे भाइयों के साथ एक घर में रह रही हैं। यह सम्मिलित परिवार हुआ तात्पर्य यह कि एक ही घर में एक बूढ़ा व्यक्ति उसकी पत्नी, उसके दो बेटे दो बहुएं, चार बच्चों के साथ सब एक ही घर में रह रहे हैं, एक रसोई से सब को खाना मिल रहा है। इससे कम और अधिक संख्या का भी सम्मिलित परिवार हो सकता है परन्तु हमारे देश में ऐसे सम्मिलित परिवार बहुत हैं चाहिए यह था कि जिस व्यस्क का विवाह होता उस का घर अलग हो जाता परन्तु ऐसा हमारे देश में साधारणतः संभव नहीं है, कुछ सम्मिलित परिवारों में विवाहित जोड़ा अपने भाई बाप से अलग चूल्हा रख लेता है परन्तु उसके लिए अलग घर होना आम तौर से कठिन है।

मैं सात वर्षों तक रियाज़ नगर (सऊदी अरब) में रहा, स्टडी के वीज़े पर था वहां अरबी भाषा का अध्ययन कर रहा था, वहीं से एम0ए0 की डिग्री प्राप्त की थी, यह ज़माना 1979 से 1985 तक का था, वहां मैं ने देखा कि जिस की शादी हुई उस का अलग घर हो गया, न ज़मीन प्राप्त करने में कठिनाई थी, न मकान बनाने के पैसों के प्राप्त में कोई कठिनाई थी, ऐसे में वहां इस्लामी परदे पर पूरी तरह अमल था। मैं ने अपने एक क्लास फेलो सऊदी से मालूम किया तो उसने बताया कि मेरे भाई के बेटे बेटियां जवान हो चुके हैं परन्तु मैंने अभी तक अपनी भाभी का चेहरा नहीं देखा है। क्या ऐसा हमारे भारत में संभव है? मैं समझता हूं नहीं, ऐसी दशा में सम्मिलित परिवार में इस्लामी परदा कैसे हो जब कि परदा इस्लाम में वाजिब है और बे परदगी गुनाहे कबीरा (बड़ा पाप) है।

कुर्आन व हदीस में आदेश है कि जवान औरतें ना महरम जवानों से परदा करें, अलबत्ता अपने महरमों से परदा नहीं है।

ना महरम और महरमः–

महरम एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है बहुत ही निकटी सम्बन्धी, इसमें फारसी का ना लगा कर नामहरम बना दिया यानी यह जो महरम न हो। परन्तु महरम

इस्लाम का परिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जिससे कभी निकाह वैद्ध न हो, और नामहरम वह है जिससे निकाह वैद्ध (जाइज़) हो पस जिससे कभी निकाह न जाइज़ हो उस से परदा नहीं है। लेकिन यह अर्थ अधूरा है, ज्ञात होना चाहिए कि वह कौन लोग हैं जिन से कभी निकाह जाइज नहीं और उनसे परदा नहीं है।

वह लोग जिन से परदा नहीं है वह यह हैंः-

अपना पति जो पहले नामहरम था परन्तु निकाह के पश्चात वह इतना निकटी हो गया कि उससे हर प्रकार का सम्बन्ध वैद्ध हो गया और पति पत्नी एक दूसरे के एक प्रकार के वस्त्र हो गये अतः पति से परदा नहीं पति के अतिरिक्त जिन से परदा नहीं वह यह हैः- बाप, दादा, परदादा, ऊपर तक, पति का बाप अर्थात ससुर, पति का दादा परदादा, अपने बेटे, पति की दूसरी बीवी के बेटे, सगा भाई, चाहे एक बाप या एक मां से हों, दूध का साझी भाई अर्थात अपनी मां के अतिरिक्त जिस औरत का दूध पिया हो उस के बेटे, भाई के बेटे, बहन के बेटे, चचा, मामू, नाना यह वह सम्बन्धी हैं जिन से कभी निकाह दुरुस्त नहीं न इनसे परदा वाजिब है। ऐसे बूढ़े सेवकों से भी परदा नहीं है जो उस अवस्था को पहुंच चुके हों जिन को औरतों से रुचि नहीं रहती। इसी प्रकार ऐसी बूढ़ियां भी परदे से मुक्त हैं जिन को काम की इच्छा नहीं होती लेकिन अगर यह भी परदा करें तो उनके लिए यह अच्छी बात है।

परदा क्या है?:-

एक औरत के लिए इस्लामी परदा यह है कि वह ना महरम मर्दों से अपने को कपड़ों आदि से छुपाए, आज कल जो निकाब पहना जाता है इससे अच्छा परदा होता है, निःसंदेह सू-रए-अह़जाब की एक आयत से ज्ञात होता है कि ईमान वाली औरतों के लिए ज़रूरी है कि वह अपने चेहरों पर कपड़े लटकाए रहा करें अर्थात चेहरा छुपाए रखा करें कि उसको कोई सताए नहीं और वह सुरक्षित रहें। सू-रए-अहजाब ही की एक और आयत से ज्ञात होता है कि उम्महातुल मोमिनीन से कुछ मांगना हो तो परदे की आड़ से मांगा करें, इन दोनों आयतों से सिद्ध होता है कि उच्च स्तर का परदा यही है कि ना महरम से मुखड़ा भी छुपाया जाय, लेकिन क्या सम्मिलित परिवार में यह संभव है? मैं समझता हूं नहीं।

सम्मिलित परिवार में चचेरे भाई और देवर नामहरम हैं। एक ही घर में रह रहे हैं हर वक्त का उठना बैठना, एक दूसरे को खाना पानी प्रस्तुत करना आदि आवश्यक होता है, ऐसे में इस्लामी परदे की क्या शक्ल हो? ऐसे में जवान लड़कियों औरतों को चाहिए कि वह सम्मिलित परिवार में नामहरम अज़ीजों जैसे चचेरे भाई, देवर आदि के बीच ढीले ढाले पूरे वस्त्र में रहें स्कार्फ़ आदि से सर ढके रहें सीने पर ओढ़नी डाले रहें अब अगर उनके सामने चेहरा खुला रहे, गट्टे तक हाथ खुले रहें, पैर खुले रहें, ऐसी हालत में उनको चाय पानी खाना आदि प्रस्तुत

करें, उन से ज़रूरत पर बातें करें तो इनशाअल्लाह अल्लाह तआला के यहां पकड़ न होगी, इसलिए कि सूर–रए–नूर में जहां परदा करने का बयान आया है वहीं ना महरम के सामने बदन का वह हिस्सा जो आम तौर से खुला रहता है उस के खोलने की गुंजाइश है उलमा ने वह हिस्सा चेहरे और हथेलियों को बताया है हिदाया में भी इसको स्पष्ट किया है, मेरे ख्याल में ख़ाला ज़ाद भाई, फूफी ज़ाद भाई, मांमू ज़ाद भाई, जो एक साथ तो नहीं रहते इसी तरह बहनोई के घर आने पर उनको उक्त वस्त्र में रह कर खाना पानी प्रस्तुत करने की गुंजाइश हो सकती है, परन्तु इन तमाम ना महरमों से तन्हाई (एकान्त) न हो, हंसी मजाक न हो।

लेकिन बड़े खेद की बात है कि कुछ लोग यह समझ लेते हैं कि सम्मिलित परिवार में परदा कहां, यह बड़ी भूल में हैं और बड़े गुनाह में मुबतला हैं।

इसी तरह कुछ लोगों का कहना है कि औरत को भी खुद कफील (स्वालंबी) होना चाहिए, उनको कारोबार और नौकरी करना चाहिए, उनको मालूम होना चाहिए कि औरत के खाने कपड़े और दूसरी ज़रूरियात की ज़िम्मेदारी अगर बेटी है तो उसके बाप पर है, बीवी है तो शौहर पर है, वह अपना घर देखे बच्चों की तरबीयत में लगे कमाने के चक्कर में न रहे, लेकिन अगर ज़रूरत पर कमाना ही पड़े तो परदे का पूरा ख्याल रहे, परदा मुआफ़ नहीं है, वह लड़कियों के स्कूल में पढ़ाने का काम कर सकती हैं। औरतों के हास्पिटल में डॉक्टर, नर्स वगैरह हो सकती हैं, बहरहाल शिक्षा प्राप्त करने से ले कर कारोबार करने या नौकरी करने में उसके लिए परदा लाज़ीमी (अनिवार्य) है।

अगर परदा न करेगी तो बड़े गुनाह में मुबतला होगी और आखिरत में सजा से बच न सकेगी। उचित मालूम होता है कि यहां सू–रए–नूर की उन आयतों का अनुवाद प्रस्तुत कर दिया जाए जिन में परदे को विस्तार से बताया गया है।

अल्लाह तआला अपने नबी को आदेश दे रहे हैं कि ''ईमान वाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें बचा कर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यही उनके लिए अधिक अच्छी बात है। अल्लाह को उसकी पूरी खबर रहती है, जो कुछ वे किया करते हैं। और ईमान वाली स्त्रियों से कह दो कि वे भी अपनी निगाहें बचा कर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने श्रृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उनमें खुला रहता है। और अपने सीनों पर अपने दुपट्टे डाले रहें और अपना श्रृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पतियों के या अपने बापों के या अपने पतियों के बापों के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के या अपने भांजों के या अपने मेल–जोल की स्त्रियों के या जो

शेष पृष्ठ....16 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

शिर्क के रूप व कार्य और जाहिली रीति–रिवाजः–

इस नियामक तथा साधारण बात के पश्चात आवश्यक है कि उन कमजोरियों, रोग तथा उन भयानक बिगाड़ की जड़ों को चिन्हित कर दिया जाए जो अज्ञानियों, बाहरी प्रभाव तथा जाहिली रीति–रिवाज से प्रभावित संप्रदायों व कौमों और उन लोगों में पाई जाती हैं जिनका पालन–पोषण सही इस्लामी शिक्षाओं, पवित्र कुर्आन व हदीस के ज्ञान तथा शुद्ध दीन की दावत से दूर तथा सही इस्लामी शिक्षाओं से वंचित परिवेश में हुआ, उन कमजोरियों को चिन्हित करना तथा रोगी शरीर में उन रोगों का सही निर्धारण व चिन्हण आवश्यक है।

सर्वव्यापी ज्ञान, असीमित इच्छा, स्वतंत्र व असीमित अधिकार व पूर्ण शक्ति अल्लाह की विशेषताएं हैं तथा इबादत (उपासना) के कार्य व पहचान जैसे सजदा (विशेष शैली में माथा टेकना) अथवा रूकूअ़ (विशेष शैली में सिर नवाना) किसी के सामने करना किसी के नाम पर उसकी प्रसन्नता के लिए रोज़ा (विशेष इस्लामी व्रत) रखना, सुदूर से पूर्ण तैयारी के साथ किसी स्थान के लिए लम्बी यात्राएं करना और उसके साथ वह मामला करना जो काबा के साथ किया जाता है तथा वहां कुर्बानी (विशेष इस्लामी बलि) के पशु ले जाना, मन्नत मानना शिर्क के काम तथा शिर्क के स्पष्ट रूप हैं, आदर के वह ढंग और पहचान जिनसे इबादत का रूप बने केवल अल्लाह के लिए विशेष है, ग़ैब का ज्ञान केवल अल्लाह को है तथा मानव शक्ति से बाहर है। हृदयों के भेदों तथा विचारों व नियतों का ज्ञान हर समय किसी के लिए सम्भव नहीं, अल्लाह तआला को सिफ़ारिश स्वीकार करने और प्रभावशाली व सम्मानित तथा सत्ताधारी लोगों को राजी व खुश करने में दुन्या के राजाओं पर क़यास नहीं करना चाहिए। ऐसी हर छोटी बड़ी बात में अल्लाह ही से सम्पर्क साधना चाहिए, सांसारिक राजाओं के समान ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के लिए दरबारियों व मन्त्रियों से मदद लेना खुदा की शान नहीं है। किसी प्रकार का सज्दा खुदा के अतिरिक्त किसी के लिए वैध नहीं। हज की इबादतें अति (आदर) के मज़ाहिर (प्रकट होने वाली चीजें) और प्रेम व तल्लीनता के तमाम पहचान काबा और हरम के साथ खास है। नेक लोगों और औलिया के नाम पर जानवरों को खास करना, उनका आदर करना, उनका चढ़ावा चढ़ाना और उनकी कुर्बानी के लिए उनकी निकटता प्राप्त करना हराम है। आज़िजी व विनम्रता

के साथ हद दर्जे का आदर केवल खुदा का हक है। निकटता व आदर की भावना से कुर्बानी करना केवल अल्लाह का हक है। ब्रह्माण्ड में नक्षत्रों, ग्रहों के प्रभाव में विश्वास करना शिर्क है। जादूगरों, ज्योतिषियों और ग़ैब की बातें बताने वालों पर भरोसा करना कुफ्र है।

नाम रखने में भी मुसलमानों को तौहीद की पहचान का प्रदर्शन करना चाहिए। गलतफहमी पैदा करने और जिससे मुशरिकाना ऐतेकाद (शिर्क वाले विश्वास) का इज़हार होता है, ऐसे शब्दों से परहेज़ करना चाहिए। खुदा के अलावा किसी की कसम खाना शिर्क है, गैर अल्लाह की मन्नतें मानना हराम है, इसी प्रकार किसी ऐसे मक़ाम पर कुर्बानी करना जहां मूर्ति थी अथवा जाहिली युग का कोई उत्सव मनाया जाता था अवैध है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बारे में अतिश्योक्ति की नक्ल और औलिया व नेक लोगों के चित्रों और शबीहों की ताजीम करने से परहेज और पूरा एहतियात करना चाहिए।

नबूवत का मूल उद्देश्य विश्वव्यापी मुशरिकाना जाहिलियत (अज्ञानता) को समाप्त करना है:-

अल्लाह के बारे में अक़ीदा और खुदा व बन्दे के बीच सम्बन्ध के सुधार और सिर्फ एक की बन्दगी की दावत, हर जमाने में नबियों की पहली दावत और उनके आने का प्रथम और अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। हमेशा उनकी शिक्षा यही रही है कि अल्लाह ही लाभ व हानि पहुंचाने की ताकत रखता है और सिर्फ वही इबादत, दुआ, ध्यान और कुर्बानी का पात्र है। उन्होंने हर दौर में अपने ज़माने में जारी मूर्तिपूजा पर करारी चोट लगाईं अज्ञान लोगों का मूर्तियों, पवित्र आत्माओं, जिन्दा व मुर्दा शखसियतों के बारे में विश्वास था कि अल्लाह ने उन्हें मान मार्यादा और सम्मान दे कर पूज्य बनाया है, और इन्सानों के बोर में उनकी सिफ़ारिशों को कुबूल करता है, जैसे महान सम्राट हर इलाक़े के लिए एक हाकिम भेज देता है और कुछ महत्वपूर्ण बातों के अलावा इलाके की व्यवस्था की जिम्मेदारी उन्हीं के सर डाल देता है, इसलिए उन्हीं को राज़ी करना लाभदायक और ज़रूरी है।

जिस व्यक्ति को पवित्र कुर्आन से कुछ भी लगाव है, उसे निश्चित रूप से यह बात मालूम होगी कि शिर्क व मूर्ति पूजा के खिलाफ मोर्चाबन्दी उससे लड़ना, उसको दुन्या से मिटाने की कोशिश करना, और लोगों को उसके चंगुल से हमेशा के लिए छुटकारा दिलाना नबियों का बुन्यादी मकसद नबियों के आगमन का मूल कारण, उनकी दावत का आधार तथा उनके संघर्ष का वास्तविक लक्ष्य था, यही उनकी दावती कार्यों का ध्रुव व केन्द्र बिन्दु था। पवित्र कुर्आन कभी तो उनके बारे में संक्षेप में कहता है।

अनुवादः *"और हमने आप से पहले रसूल भेजे। उनके पास हमने वह्इ (ईशवाणी) भेजी कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तो मेरी ही इबादत करो।*

(सूरः अल् अंबिया–25)

और कभी विस्तार के साथ एक–एक नबी का नाम लेता है और बताता है कि दावत की शुरुआत इसी तौहीद की दावत से हुई थी और पहली बात जो उन्होंने कही वह यही थी।

अनुवादः *''उन्होंने कहा! ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (उपास्य) नहीं।*

(सूरः अल्–अअ्राफ. 56)

यही बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) और शिर्क विश्वव्यापी, दीर्घकालीन और शक्तिशाली ''जाहिलियत'' है जो किसी ज़माने के साथ खास नहीं, और यही मानव जाति का प्राचीनतम और घातक रोग है जो मानव इतिहास के सारे युगों, सभ्यता, आर्थिक व राजनीति के तमाम परिवर्तनों व क्रान्तियों के बावजूद मानव जाति के पीछे लगा रहता है, अल्लाह की गैरत और सांस्कृतिक विकास की राह का रोड़ा बनता है और उनको इन्सानियत के बुलन्द दर्जे से गिरा कर गर्त में औंधे मुंह डाल देता है और यही खण्डन क़यामत तक के लिए दीनी दावतों और सुधारात्मक अभियानों का बुन्यादी स्तम्भ और नबूवत की सर्वकालिक मीरास है।

अनुवादः *''और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वे उससे सम्पर्क साधे।''*

(सूरः अज़्ज़ुख़रुफ़ 28)

यह कदापि जायज़ नहीं कि नई सुधारात्मक व दावती और ज़माने की नई ज़रूरतों के असर से ''शिर्क जली'' के महत्व को कम कर दिया जाये, और दावत व तबलीग़ के बुन्यादी नियमों में इसको गौण हैसियत दी जाये या ''राजनीतिक स्वीकारोक्ति'' तथा इन्सानों के बनाये हुए किसी कानून व्यवस्था के कुबूल करने को और गैर अल्लाह की इबादत को एक दर्जे में रखा जाये कि शिर्क प्राचीन जाहिलियत की (जब मानव बुद्धि और ज्ञान व सभ्यता शैष्यावस्था में थे) बीमारी और ख़राबी तथा जिहालत की एक भद्दी और भोंडी शक्ल थी, जो इन्सान अविकसित और असभ्य युग ही में इख़्तियार कर सकता है। अब इसका दौर गुजर गया। इन्सान बहुत तरक्क़ी कर चुका है, अब उसके बौद्धिक भटकाव नये–नये विकसित रूप में प्रकट होता है, यह दावा वास्तविकता के भी विपरीत है। शिर्क जली (खुला) बल्कि खुली हुई बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) आज भी स्पष्ट रूप में मौजूद है, और क़ौम, पूरे–पूरे मुल्क यहां तक कि बहुत से मुसलमान शिर्क जली से ग्रसित हैं और पवित्र कुर्आन का यह एलान आज भी सत्य है।

अनुवादः *''उन में से अधिकतर लोगों का हाल यह है कि अल्लाह को मानते भी हैं और उसका साझीदार भी ठहराते हैं।''*

(सूरः यूसुफ 106)

सच यह है कि अगर कोई इसका पात्र था कि उसके अक़ीदे की अनदेखी कर ली जाये क्योंकि वह आजीवन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए डट कर मुकाबला और जान व परिवार से कुर्बान रहा तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

के चचा अबू तालिब थे। जीवनी लेखक एक मत हो कर उनके बारे में लिखते हैं कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ढाल और घेरा बने हुए थे, और अपनी पूरी क़ौम के विपरीत आपके सहायक और समर्थक थे। लेकिन सही बयानों से साबित है कि जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबु तालिब की मौत के समय, जब कि अबु जहल और अब्दुल्ला बिन अबी उमैया भी वहां बैठे हुए थे, उनके पास गये और कहा ''ऐ चचा! आप ला–इला–ह–इल्लल्लाह कह दीजिए, मैं इस कलिमा की खुदा के यहां गवाही दूंगा, तो अबू जहल और इब्ने अबी उमैया कहने लगे, अबु तालिब! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब से मुंह मोड़ोगे तो अबुतालिब ने यह कहते हुए जान दी कि अब्दुल मत्तलिब के मज़हब पर हूं। सही बयानों में आता है कि हज़रत अब्बास रज़ि0 ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा! अबु तालिब आपकी रक्षा और मदद करते थे, और आपका बड़ा लेहाज व समर्थन करते थे और लोगों की प्रसन्नता और नाराजगी की कतई परवाह नहीं करते थे, तो क्या इसका फायदा उनको पहुंचेगा? आपने फरमाया ''मैंने उनको आग की लपटों में पाया, और मामूली आग तक निकाल लाया।''

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान)

इसी तरह इमाम मुस्लिम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अंहा का बयान लिखा है। वह कहती हैं कि मैंने कहा ऐ! अल्लाह के रसूल इब्ने जदआन जाहिलियत (इस्लाम पूर्व काल) के ज़माने बड़ी सिलह रहमी (अपने परिवार वालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना) करते थे, अनाथों और गरीबों को खाना खिलाते थे, तो क्या उनके लिए यह लाभकारी होगा? आपने कहा ''नहीं! उनको इससे कोई फायदा हासिल न होगा क्योंकि उन्होंने कभी नहीं कहा'' ऐ मेरे रब! बदले के दिन मेरे गुनाह को बख्श दीजिएगा।

इससे भी अधिक साफ और सुस्पष्ट हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अंहा की एक दूसरी रिवायत है जिसमें वह कहती हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र की तरफ़ रवाना हुए और जब मक़ामे हर्रः अलवबरः पर पहुंचे तो एक व्यक्ति आया जिसके साहस की बड़ी चर्चा थी, उसको देख कर सहाबा को बड़ी खुशी हुई कि इससे इस्लाम के लश्कर में जिनमें 313 लोग थे एक वृद्धि होगी जब वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया तो उसने कहा कि मैं इसलिए आया हूं कि आपके साथ चलूं और माले ग़नीमत (युद्ध के बाद प्राप्त माल) में शरीक हूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हो? उसने कहा नहीं। आपने कहा वापस जाओ इसलिए कि मैं किसी मुश्रिक से मदद नहीं ले सकता। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अंहा कहती हैं

कि वह कुछ दूर चला, यहां तक कि हम लोग जब शजरः नामी स्थान पर थे, वह फिर आया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वह पहली बात कही, आपने वही पहला जवाब दिया, फरमाया जाओ मैं मुश्रिक से मदद नहीं लेता। वह चला गया। और बैदा (स्थान) पहुंचने पर फिर आया। आपने फिर पूछा, अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? उसने कहा, हाँ। उस समय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा तो चलो।

..... जारी.....

❖❖❖

सम्मिलित परिवार और.....

उनकी अपनी मिल्कियत में हों उन के या उन अधीनस्थ पुरुषों के जो उस अवस्था को पार कर चुके हों जिस में स्त्री की ज़रूरत होती है या उन बच्चों के जो स्त्रियों के परदे की बातों से परिचित न हों। और स्त्रियां अपने पांव धरती पर मार कर न चलें कि अपना जो श्रृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमान वालो! तुम सब मिल कर अल्लाह से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो''।

(अन–नूरः30–31)

आयतों के अनुवाद पर ध्यान दें: पुरुषों (मर्दों) को भी आदेश है कि वह अपनी निगाहों को बचाए रखें अर्थात निगाहें नीची रखा करें, इसको पवित्र कुर्आन के टीका कारों (मुफस्सिरों) ने यूं स्पष्ट किया है कि इस का तात्पर्य यह है कि मर्द नामहरम औरतों पर अनावश्यक निगाह न डाला करें और अगर उन पर निगाह पड़ जाय तो तत्काल हटा लिया करें, अन्यथा पाप होगा।

वास्तव में स्त्री समूची श्रृंगार है और छुपाने की वस्तु है, सिवाय उसके उस भाग के जो साधारणतः खुला रहता है, इसको भी टीकाकारों ने स्पष्ट किया है और बताया है कि इस का तात्पर्य मुखड़ा और हथेलियां हैं, यद्यपि इस सत्य को भी नकारा नहीं जा सकता है कि सुन्दर मुखड़े ही से बुराईयां उत्पन्न होती हैं, परन्तु सम्मिलित परिवार का वातावरण यदि दीनी है और उसके बड़े बूढ़े नौजवानों पर निगाह रखते हैं और उनको अनुचित बातों पर रोकते टोकते रहते हैं तो इनशाअल्लाह बुराइयों की आशंका न रहेगी, परन्तु परिवार के बाहर के नामहरमों से मुखड़ा भी छुपाना और मुखड़े का परदा करना आवश्यक है और जब मोमिन औरतें बाहर निकलें तो निक़ाब पहन कर या ठीक से चादर ओढ़ कर निकलें कि इसी में उनके लिए सुरक्षा और भलाई है।

अनुवाद में जिन लोगों को परदे से मुक्त किया गया है उनमें मिलकीयत वाले लोग भी हैं, मिलकीयत वालों से तात्पर्य है दास और दासियां (गुलाम और बांदियां) परन्तु मेरी जानकारी में अब दास और दासियां पूरे विश्व में नहीं पाई जाती हैं।

❖❖❖

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी —अनुवादः अतहर हुसैन

पहले ख़लीफा

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0:–

अल्प मासिक वेतनः–

वजीफ़े (वेतन) में उनके और उनके परिवार के लिए कपड़े और भोजन नियुक्त था। उनको दो चादरें मिलती थीं, जब वह फट जाती थी तो उन्हें वापस करके दूसरी ले लेते थे, भोजन बहुत ही साधारण और वस्त्र बहुत कम मूल्य का होता था। यात्रा के समय सवारी प्रस्तुत की जाती थी।

स्वाद से विरक्तिः–

संयम की यह दशा थी कि शर्बत तक पीते समय भय से कांपने लगते थे। एक बार प्यास लगी, आपने पानी मांगा, लोगों ने पानी में शहद मिला कर शर्बत बनाया और आपको प्रस्तुत किया। परन्तु जब प्याला आपके हाथ में आया और मुंह के निकट पहुंचा तो फूट–फूट कर रोने लगे। आपको रोता देख उपस्थित जन भी रोने लगे, कुछ समय तक यह रुदन का वातावरण रहा, जब कुछ शान्ति हुई तो लोगों ने पूछा कि आखिर इस समय इस प्रकार रोने का कारण क्या था? आपने फरमाया ''मैं एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ था, आप किसी वस्तु को दूर हो, दूर हो, कह रहे थे। मैंने कहा ''या रसूलुल्लाह! वह कौन सी वस्तु है जिसे आप दूर हो दूर हो कह रहे हैं? देखने में तो मुझे कुछ दिखाई नहीं देता है। बताइये आप किसे हटा रहे थे''? मेरी इस प्रार्थना पर आपने कहा ''दुन्या मेरे सामने आभूषित तथा आलंकृत हो कर आई थी, मैंने उसे दूर किया है।'' इस समय जब शहद सामने लाया गया तो मुझे अकस्मात यह घटना याद आ गई और यह चिन्ता हुई कि कहीं मैं दुन्या के जाल में न फँस जाऊँ।''

स्वर्गवास के समयः–

स्वर्गवास के समय एक गुलाम, एक ऊँट और एक पुरानी चादर के अतिरिक्त बैतुलमाल (राजकोष) की कोई और वस्तु घर में मौजूद न थी। कफ़न के लिए भी आपने नया कपड़ा पसन्द न किया और कहा कि इस समय मेरे शरीर पर जो कपड़े हैं, उसी को धो कर दूसरे दो कपड़ों के साथ दफ़ना देना। हज़रत आयशा रज़ि0 ने निवेदन किया ''यह तो पुराना है, कफ़न के लिए नया चाहिए'' आपने कहा, ''जीवित प्राणी मुर्दे की अपेक्षा नये कपड़े के ज़ियादा हकदार हैं, मेरे लिए यही फटा–पुराना ठीक है।''

स्वर्गवास के समय घर में जो भी सामग्री थी वह राजकोष में दाखिल कर दी गई। राजकोष से जो वज़ीफ़ा लेते थे यद्यपि वह बहुत ही कम था जिससे बहुत कठिनतापूर्वक जीवन व्यतीत करते थे, परन्तु इस पर भी कभी यह इच्छा न थी कि बैतुलमाल (राजकोष) की कोई राशि अपनी आवश्यकताओं के लिए व्यय करें। अन्तिम समय इसी ध्यान से इतने व्याकुल हुए कि वसीयत की कि उनकी सम्पत्ति को बेच कर यह राशि राजकोष में जमा कर दी जाये और ऐसा ही हुआ। आपके बाद हज़रत

उमर रज़ि0 के सम्मुख यह बात आई तो नेत्रों में आंसू भर आये और रोते हुए कहने लगे ''खुदा रहम करे, अबू बक्र रज़ि0 पर, अपने बाद वालों के लिए मामला बहुत सख़्त कर गये।

आख़िरत (परलोक की चिन्ताः–

परन्तु इसके अतिरिक्त उत्तरदायित्व के बारे में पूछ–ताछ की चिन्ता की यह दशा थी कि जो कुछ करते उसे किसी गिनती में न लाते और हर वक़्त परलोक की पूछ–ताछ से कांपते रहते थे। कभी–कभी इतना रोते कि देखने वालों को दया आती। पक्षियों को चहचहाते देख कर कहते, पक्षियों! धन्य हो, संसार में चरते–चुगते हो, वृक्षों की शीतल छाया में विश्राम करते हो और क़यामत में तुम से कोई पूछ–ताछ नहीं, काश! अबू बक्र भी तुम्हारी तरह होता तो अन्त के झगड़ों से मुक्ति पाता। शासन तथा समृद्धि को बड़े उत्तरदायित्वों की बात समझते थे कहते थे, ''दुन्या में धनवान का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। परलोक में उससे पूछ–ताछ अधिक होगी और उसका कर्मपत्र बहुत लम्बा होगा।''

अपार नम्रताः–

स्वभाव में अत्यधिक नम्रता थी। कभी कोई ऐसी बात पसन्द न करते थे जिससे दूसरों की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठता प्रकट हो। प्रभुत्व तथा अधिकार के होते हुए भी साधारण जनता के समान जीवन व्यतीत करते थे। वह तो इसे उचित न समझते थे कि उनके सम्मान हेतु कोई खड़ा हो। लोग प्रशंसा करते तो कहते ''ऐ खुदा तू मेरी हर बात से भली भांति परिचित है और मैं अपनी दशा इन लोगों से अधिक जानता हूं। खुदाया! तू मुझे इनकी सद्भावनाओं से उत्तम प्रमाणित कर, मेरे अपराधों को क्षमा कर दे और लोगों की अनुचित प्रशंसा पर मुझे न पकड़।

यदि कोई सेना विदा करते तो सैनिकों के साथ दूर तक पैदल चले जाते। कोई आदर तथा सम्मान हेतु सवारी से उतरना चाहता तो उसे मना करते और कहते कि इसमें हानि ही क्या, अगर मैं भी थोडी दूर तक अपने पांव इस पवित्र मार्ग में धूल से भर लूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदेश है कि जो पांव ईश्वर के मार्ग में धूल से भर जाते हैं अल्लाह उन पैरों को नरक की अग्नि से वंचित कर देता है।

कोष का वितरणः–

लोगों की आवश्यकताओं के लिए राजकोष से वज़ीफ़े बांध दिये थे। ख़ज़ाने में जो आमदनी आती उसे लोगों में बांट देते थे। बांटने में इस बात का ध्यान रखते थे कि किसी भी व्यक्ति को कम न मिले। कोष में धन संचित करने के बजाय ऐसा प्रबन्ध रहता था कि जो भी धन आये वह लोगों की आवश्यकतापूर्ति में व्यय हो जाये। कभी–कभी राजकोष की समस्त आय का वितरण कर देते थे और कोष में एक कौड़ी भी न छोड़ते। इस विषय में आपकी दशा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत मिलती–जुलती थी। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह नियम था कि जब भी आपके पास धन आ जाता तो उसे बांटने में बहुत जल्दी करते। एक बार कहीं से बहुत अधिक मात्रा में धन आ गया और दिन भर बांटने के बाद भी किसी प्रकार समस्त धन का वितरण

न हो सका। उस दिन घर नहीं गये, अन्ततः दूसरे दिन जब सारा धन आवश्यकतानुसार लोगों तक पहुंच गया तब आपने घर में क़दम रखा। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा जीवन भर हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0 के सम्मुख रहा और आप भी ख़ज़ाने में ढेर लगाने के बजाय समस्त धन लोगों में बांट देने को ही उत्तम समझते थे।

गैर मुस्लिमों के साथ व्यवहारः–

आपकी दृष्टि में समस्त जनता समान थी, यहां तक कि इस विषय में मुस्लिम तथा गैर मुस्लिम में कोई अन्तर न था। जिस प्रकार आप मुसलमान जनता की देख–रेख करते और उनकी आवश्यकता पूर्ति की चिन्ता करते थे, उसी प्रकार गैर मुस्लिम जनता की देख–रेख और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना अपना कर्तव्य समझते थे। गैर मुस्लिम सैन्य–सेवा के भार से रहित थे और ज़कात की तरह उनसे कोई ऐसा कर नहीं लिया जाता था जिससे आमदनी में बराबर वृद्धि होती रहे, बल्कि एक हल्का सा टैक्स लिया जाता था, वह भी केवल उन लोगों से जो सुविधापूर्वक अदा करने की क्षमता रखते थे। बूढ़े अपाहिज तथा निर्धन इससे मुक्त थे, यही नहीं बल्कि राजकोष से ही उनका भरण पोषण किया जाता था। आक्रमण के समय सेनापति को चेतावनी दी जाती थी कि किसी स्त्री, बच्चे बूढ़े का वध न किया जाये, फल वाले वृक्षों को न काटा जाये, बस्तियों को न उजाड़ा जाये। मन्दिरों तथा मठों को हानि न पहुंचाई जाय और उनके अन्दर रहने वाले समस्त सन्यासियों को किसी प्रकार का कष्ट न दिया जाये। ◆◇◆

कुर्आन की शिक्षा.....

6. यहूदियों और ईसाईयों का अक़ीदा है कि हम कुछ भी करें हमारे पैग़म्बर हम को बचा लेंगे, बहुत से मुसलमानों में भी यह ग़लत अक़ीदा पैदा होने लगा, इसी का इनकार किया जा रहा है, साफ़ साफ़ कहा जा रहा कि आमाल ही आधार है, शिर्क के बदले तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी सिफ़ारिश नहीं करेंगे, और जिसकी भी आप सिफारिश करेंगे अल्लाह की इजाज़त से करेंगे।

7. यह गुण सहाबा पर पूर्ण रूप से सिद्ध होते हैं और जो भी उनके रास्ते पर चलेगा वह भी उनका अधिकारी होगा।

8. सूरह के शुरु में अनाथों के अधिकार देने पर बल दिया गया था और कहा गया था कि अनाथ बच्ची का अभिभावक अगर यह समझता हो कि मैं हक अदा न कर सकूंगा तो वह निकाह न करे, दूसरे से कर दे, उस पर मुसलमानों ने ऐसी महिलाओं से निकाह बंद कर दिया था मगर अनुभव से मालूम हुआ कि कुछ स्थानों पर वली का निकाह कर लेना ही अच्छा है जो देख रेख वह करेगा दूसरा न करेगा तब सहाबा ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसकी अनुमति मांगी, उस पर यह आयत उतरी और अनुमति मिल गई और कह दिया गया कि पहले वाली मनाही भी उस हालत में थी जब उनका अधिकार न दिया जाता और अनाथों का अधिकार देने पर बल दिया गया था, तो जो भलाई करने के इरादे से निकाह करता है तो उसे अनुमति है। ◆◇◆

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

नमाज़ से तमाम गुनाहों की नापाकी धुल जाने का राज़ः–

और गालिबन यही मंशा और यही मतलब है उन अहादीस का जिन में नमाज़ों को (हक़ीक़ी और सच्ची नमाज़ों को) गुनाहों से सफाई और मगफिरत व मुआफी का जरीया बतलाया है, सही बुखारी और सही मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अनुवादः ''बतलाओ अगर तुम में किसी के दरवाजे पर नहर जारी हो जिसमें वह रोजाना पांच मरतबा नहाता हो तो क्या उसके जिस्म पर कुछ भी मैल कुचैल बाक़ी रहेगा? सहाबा रज़ि0 ने अर्ज किया कि कुछ भी नहीं बाक़ी रहेगा, आपने इरशाद फरमाया, बिल्कुल यही मिसाल पांच नमाज़ों की है, अल्लाह उन के जरीये से खताओं को धोता और मिटाता है।

और मुसनद अहमद में हज़रत अबु जर रज़ि0 से मरवी हैः–

''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन सरदी के अय्याम में (जो खजां का मौसम होता है) बाहर निकले और दरख्तों के पत्ते अज खुद झड़ रहे थे आपने एक दरख़्त की दो टेहनियों को पकड़ा और हिलाया तो एक दम उसके पत्ते झड़ने लगे, फिर आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे मुखातब कर के फरमाया या अबू जर! मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं हाजिर हूं, इरशाद फरमाइये, आपने फरमाया बिला शुब्हा मोमिन बन्दा जब खालिस अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ता है तो उसके गुनाह इन पत्तों की तरह झड़ जाते हैं।''

(मिशकात)

बहरहाल नमाज़ आला दर्जे की इबादत और कुर्बे खुदावन्दी का बेहतरीन ज़ीना होने के साथ साथ तमाम गुनाहों और गन्दगियों की ततहीर और पूरी इस्लामी जिन्दगी की तामीर का एक अजीब व ग़रीब जामे नुस्खा भी है बकौल सय्यिदुना फारूके आज़म रज़ि0 ''वह दीन का ऐसा क़ल्ब है कि जो उस को संभाल लेगा वह अपने पूरे दीन को संभाल लेगा और जो उसको जायेअ् करेगा, उसका बाक़ी दीन भी बरबाद होगा।''

नमाज़ की अहम्मीयत हज़रत इब्राहीम और दीगर अंबिया अ़लै0 की नज़र मेंः–

नमाज़ की यही वह बुलन्दियां और यही वह तासीरात हैं जिन की वजह से सय्यिदुना हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने भी अल्लाह तआ़ला से दुआ मांगी कि ''मेरे परवरदिगार! मुझे नमाज़ काइम करने वाला बना और मेरी नस्ल को भी।''

(इब्राहीमः 40)

और इक़ामते सलात ही के मक्सदे अजीम के लिए अपने इकलौते फरजन्द हज़रत इस्माईल अलै0 और उनकी वालिदा को अरब की बेआब व गयाह सरज़मीन में बसाना आपने गवारा किया।

कुर्आन मजीद में उन की यह अर्ज़दाश्त महफूज है, अनुवादः "मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी नस्ल तेरे मुअ़ज़्ज़म व मुहतरम घर के नज़दीक बिन खेती वाली वादी में बसा दी है ऐ हमारे परवरदिगार ताकि वह नमाज़ें काइम करें।" (इब्राहीमः 37)

अल्लाह अल्लाह! हज़रत खलील अलै0 को अपनी नस्ल का नमाज़ों से वाबस्ता रहना और नमाज़ें काइम करना कितना अज़ीज है कि इस गरज़ के लिए अपने बीवी बच्चे को बैतुल्लाह के पास एक बे आब व गयाह वादी में बसाते हैं, और एक हज़रत खलील अलै0 ही पर मुन्हसिर नहीं, अल्लाह के सारे ही पैगम्बरों को नमाज़ इसी कदर अज़ीज और महबूब थी और सभी ने अपनी अपनी उम्मतों को नमाज़ की दावत दी, फिर कुर्आन मजीद ही का बयान है कि बाद में पैदा होने वाले नालाइक़ अख्लाफ ने नमाज़ों से बे तअल्लुक़ी और बे परवाई इख्तियार की और उन्हें खोया और अपनी नफ्सानी ख्वाहिशात के वह गुलाम बन गए।

नमाज़ खोने ही की वजह से अगली उम्मतों में फसाद आयाः-

सूरे मरयम में तमाम मशहूर अंबिया व रुसुल का नमाज़ के साथ शगफ बयान करने के बाद इरशाद फरमाया गया है अनुवादः "फिर पैदा हुए उनके बाद ऐसे नाखलफ जिन्होंने खोया और बरबाद किया नमाज़ को और गुलाम हो गये नफ्सानी ख्वाहिशात के, सो यह अनकरीब देखेंगे खराबी। (सूरः मरयमः 59)

इस आयत में भी नमाज़ की इस तासीर की तरफ कैसा साफ इशारा है कि शहवात व मुनकरात से आदमी की हिफाज़त करती और सलाह व तक़्वे की राह पर उस को साबित कदम रखती है, और उस को खो देने (बिल्कुल न पढ़ने या अच्छी तरह न पढ़ने) की वजह से आदमी शहवात का बन्दा बन जाता है। और बिल आखिर तबाही व बरबादी के गड्ढे में गिरना उसके लिए ज़रूरी है, गोया उम्मतों का सलाह व फसाद बड़ी हद तक नमाज़ों के काइम करने और उनको जाए कर देने का नतीजा होता है।

अपनी उम्मत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आखरी वसीयतः-

गालिबन यही वह राज़ और अगली उम्मतों की तारीख का यह वह सबक था जिस के पेशे नज़र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुन्या से जाते जाते बार बार उम्मत को नमाज़ की वसीयत और ताकीद फरमाई, यहां तक कि एक सही रिवायत के मुताबिक आखिरी अल्फाज़ जो आप की ज़बाने मुबारक से बार बार निकले वह यही थे कि अनुवादः "देखो! नमाज़ को मजबूती से थामे रहना और गुलामों बांदियों के साथ हुस्ने सुलूक का खयाल रखना।

शेष पृष्ठ....29 पर

एक संगीन मर्ज़ को दूर करने की जरूरत

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

मग़रिब की लाई हुई जम्हूरियत और उसका सेक्युलरिज्म इन दोनों का सांचा मग़रिबी है, इस्लाम पसन्द लोग भी इसी सांचे में इस्लामी तरी—कए—कार को समोने की तदबीर पर इक्तिफा करते हैं जो नाकाम हो जाती है सहीहुल फ़िक्र अफराद की तादाद ग़ैर सहीहुल फिक्र अफराद की तादाद से ज़ियादा करना होगी, इसके लिए तरबियती व दावती निज़ाम को पूरी तुंदीही से चलाना होगा, और सब्र व बर्दाश्त के साथ उम्मत की अकसरीयत को उसमें ढालना होगा, फिर वह ताक़त हासिल होगी जिसको दुशमन शिकस्त न दे सकेगा, इस अहम पहलू के साथ दूसरा अहम पहलू ये भी है कि मुसलमानों में तरी—कए—कार के लिहाज़ से जो फिर्का बन्दी और इख्तिलाफी सूरत कर दी गई है वह दूर की जाए और इत्तिहाद पैदा हो इसके लिए अपनी राय पर क़ाइम रहते हुए दूसरे की राय का एहतिराम करना होगा, और जोश में आ कर होश की बातों को नज़र अंदाज़ करने से बचना होगा, जिसकी इस वक़्त उम्मते मुस्लिमा में बहुत कमी है कि एक ही मक़सद के लिए कई कई गिरोहों में बंट कर अपनी मुत्तहिद ताक़त को मुसलमान बरबाद कर रहे हैं और दूसरे के काम और मक़ाम को ठुकरा कर अपनी मुत्तफिक़ा हैसियत को सख़्त नुक़सान पहुंचा रहे हैं, हर एक अपनी राय को कुर्आन व हदीस की बात की तरह आला समझता है और दूसरे को ग़लत कार और नाक़ाबिले एतिबार समझता है, इस मर्ज़ को दूर करने की बड़ी ज़रूरत है।

(तामीरे हयात 10 अक्तूबर 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

विश्व (काइनात) में सिर्फ एक पृथ्वी है

—डॉ0 मुहम्मद याकूब हुसैन खालिदी

पृथ्वी का अर्थ है वह ग्रह जिसको अल्लाह ने अपनी पसन्दीदा प्राणी इनसान को बसाने के लिए और जब आवश्यकता पड़े उसके मार्ग दर्शन के लिए अपने बरगुज़ीदा (निर्वाचित) ईश भक्तों (रसूलों) को और नबियों को भेजने के लिए बनया।

सारे विश्व में अर्थात सात आसमानों और अनगिनत सितारों और खरबों ग्रहों में ऐसा ग्रह पृथ्वी केवल एक है। जिसमें ईश्वर की सर्वप्रिय प्राणी मानव को बसाया गया है। वह केवल एक ही पृथ्वी है।

वैज्ञानिकों ने अपनी प्रगतिशील टेक्नोलाजी के साथ वर्षों से दूसरे आकाशीय ग्रहों में मानव जैसे प्राणी की खोज जारी कर रखी है। लेकिन अब तक उनकी अपनी खोज में असफलता के सिवा कुछ न मिला। दैनिक मुनसिफ (हैद्राबाद) में 24 नवम्बर 2015 के वैज्ञानिक टेक्नालोजी एवं चिकित्सा सप्लीमेंट में मीडिया रिपोर्ट के द्वारा बताया गया है कि मंगल से प्राप्त होने वाले चित्रों को देख कर वैज्ञानिक उस समय हैरान रह गये जब एक बड़ा चूहा उन्हें मंगल ग्रह की सतह पर बैठा नज़र आया। और उस चित्र से लग रहा था कि वह न केवल जीवित था बल्कि अपने खाने की तलाश में था। आर्टइलियान ओवी के स्क्रीन पर दिखाई देने पर लोगों को चकित कर दिया। उस चूहे के बड़े कान आंख नाक इस विचार को शक्ति देते हैं कि वह कोई जीवित चूहा जैसा कोई जीव है। यह एक चौंका देने वाली बात है। लेकिन वह तो मानव जैसी कोई प्राणी तो नहीं हो सकता।

मंगल ग्रह पर धरातल पर पानी भी मिल गया है लेकिन वह बड़ा नमकीन है कि मानव के प्रयोग लायक नहीं है। उसके विपरीत शोध करने के लिए जिस स्पेस शिप का प्रयोग किया गया है उसने मंगल धरातल की प्रत्येक दिशाओं से चित्र लिए और देखा लेकिन कहीं भी मानव जैसी समझ बूझ रखने वाली कोई प्राणी दिखाई नहीं दिया। इस प्रकार यह वैज्ञानिक अपनी अपनी गवर्नमेंट का धन, अपनी ऊर्जा, किसी असफल मिशन में व्यय कर रहे हैं इस विश्व के बनाने वाला ईश्वर कहता है। ''तो क्या ये लोग कुर्आन में तदब्बुर नहीं करते या इनके दिलों में ताले पड़े हैं।

(मुहम्मद—24)

उक्त कुर्आन की पंक्ति में वैज्ञानिक कुर्आन पर ध्यान केन्द्रित करते तो उन पर निम्नलिखित वास्तविकता प्रकट होती कि अल्लाह ने सिर्फ और सिर्फ एक पृथ्वी की रचना की जिस पर मानव जैसी बुद्धिमान हस्ती को अपनी उपासना के लिए बसाया है। कुर्आन की आयत ''सूरा अंबिया में प्रदर्शित है। जिसका अर्थ निम्न है—

''क्या वह लोग जिन्होंने कुफ्र (ईश्वर का इन्कार किया) की जिद इखतियार करते हैं, ध्यान नहीं करते कि सारे आकाश और पृथ्वी आपस में मिले हुए थे। फिर हमने उनको अलाहदा किया।

(सूरः अंबिया–111)

इस कुर्आनी आयत में *"Big Ban Theory"* की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है और प्रदर्शित करता है कि सारे सात आकाशों के साथ केवल पृथ्वी का वर्णन किया है। आयत 2 (हामीम सजदा आयत 11–12 में है)

अनुवादः– ''फिर वह (ईश्वर) आकाशों की तरफ ध्यान किया वह केवल धुआं था। उसने पृथ्वी एवं आकाशों से कहा प्रकट हो जाओ, तुम चाहो या न चाहो और आकाशों व पृथ्वी ने कहा हम आ गये तेरे हुकुम की तरफ तब उसने दो दिन में सात आसमान बना दिये। और हर आकाश में अल्लाह का विधान लागू कर दिया। और दुन्या वाले आकाश को हमने प्रकाश मयी सितारों से सुसज्जित किया और इसे अत्यंत सुरक्षित किया। यह सब कुछ एक अत्यंत महान ज्ञानी ईश्वर की योजना संरचना है''

उपरोक्त आयत मुबारका में भी केवल एक पृथ्वी का वर्णन है और दुन्या का शब्द भी केवल एक वचन में है। इस प्रकार किसी दूसरी पृथ्वी अथवा संसार का पाया जाना मुमकिन (सम्भव) नहीं है।

कुर्आन की आयत का अर्थ– कुर्आन में ईश्वर फरमाता है ''वास्तव में तुम्हारा पालनहार अल्लाह है जिसने आसमानों और पृथ्वी को 6 दिन में पैदा फरमाया। फिर वह अपने सिंहासन पर प्रकाशमान (जलवा अफरोज़) हुआ''।

(सूरः आराफ–54)

अर्थात आसमानों के लिए बहुवचन तथा पृथ्वी के लिए एक वचन निम्नलिखित आयत में भी यही कुछ मिलेगा।

अर्थ– ''वास्तविकता यह है कि तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने आसमानों और पृथ्वी को 6 दिन में पैदा किया जबकि उससे पहले उसका तख्त पानी पर था।

(सूरः हूद–7)

''वह जिसने 6 दिन में आकाशों और पृथ्वी और इन सारी वस्तुओं जो आसमानों और ज़मीन के बीच में है बना कर रख दिया और फिर अपने अनन्त सिंहासन (अर्श) पर विराजमान हुआ''।

(सूरे अलफुरकान–54)

''हमने आकाशों और पृथ्वी और उसके बीच सभी चीजों को 6 दिन में पैदा किया और मुझे कोई थकान नहीं हुआ''।

''वही है जिसने आकाश व पृथ्वी के बीच जो कुछ है 6 दिनों में पैदा किया फिर अपने अर्श पर जलवा अफरोज हुआ।

अगर अल्लाह तआला यही बात केवल एक बार फरमा देता तो भी कुर्आन मजीद का अनमिट चिन्ह बन जाता। लेकिन ईश्वर ने आकाशों के विपरीत केवल एक पृथ्वी का बयान कुर्आन की विभिन्न सूरतों में इस प्रकार दोहराया है कि एक पृथ्वी के अस्तित्व को मानने के सिवाय कोई और रास्ता रह नहीं जाता है।

ईश्वर ने पृथ्वी को मानव

शेष पृष्ठ....41 पर

आपके प्रश्नों के उत्तर?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ज़कात के मुस्तहिक़ कौन लोग हैं?

उत्तरः इस ज़माने में ज़कात के मुस्तहिक यह हैं—

1). ''फक़ीर'' यानी वह शख्स जिस के पास कुछ थोड़ा माल व अस्बाब है लेकिन निसाब के बराबर नहीं है।

2). मिस्कीन यानी वह शख्स जिसके पास कुछ भी नहीं है।

3). कर्जदार यानी वह शख्स जिस के जिम्मे लोगों का कर्ज़ हो और उसके पास इतने पैसे न हों या इतना चांदी सोना न हो कि कर्ज़ निकालने के बाद निसाब भर का माल बच रहे।

4). मुसाफिर जो हालते सफर में तंगदस्त हो गया हो उसे उस की जरूरत के मुताबिक़ ज़कात देना जाइज़ है।

प्रश्नः जक़ात का निसाब क्या है?

उत्तरः जिस के पास दो सौ दिर्हम चांदी यानी साढ़े बावन तोला चांदी यानी 612 ग्राम, 282 मिली ग्राम चांदी हो या इतनी चांदी खरीदने के पैसे हों, अगर चांदी न हो सिर्फ सोना बीस मिस्काल यानी साढ़े सात तोला यानी 87 ग्राम, 470 मिली ग्राम हो तो वह साहिबे निसाब है अगर किसी के पास 412 ग्राम चांदी से कम चांदी है और 67 ग्राम सोने से कम सोना है तो अगर दोनों की क़ीमत से 612 ग्राम, 282 मिली ग्राम चांदी खरीदी जा सकती है तो वह भी साहिबे निसाब है इसी तरह किसी के पास थोड़ी चांदी या थोड़ा सोना है और कुछ नक़्द पैसे हैं तो चांदी या सोने की क़ीमत और नक़्द पैसों से 612 ग्राम, 282 मिली ग्राम चांदी खरीदी जा सकती है तो वह भी साहिबे निसाब है।

प्रश्नः इस्लामी मदरसों में ज़कात का माल देना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः हाँ नादार तालिब इल्मों को ज़कात का माल देना जाइज़ है और मदरसों के मोहतमिमों को इस लिए कि वह नादार तालिब इल्मों पर खर्च करें, देने में कुछ हरज नहीं।

प्रश्नः किन लोगों को ज़कात देना नाजाइज़ है?

उत्तरः निम्न लिखित लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं—

(1) मालदार यानी वह शख्स जिस पर खुद ज़कात फर्ज़ है।

(2) सय्यिद यानी बनी हाशिम बनी हाशिम से हज़रत हारिस रज़ि0 बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत जाफर रज़ि0 और हज़रत अक़ील रज़ि0 और हजरत अब्बास रज़ि0 और हज़रत अली रज़ि0 की औलाद मुराद हैं।

(3) अपने बाप, माँ, दादा, दादी, नाना, नानी, चाहे और ऊपर के हों।

(4) बेटा, बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी चाहे और नीचे के हों।

(5) खाविनद अपनी बीवी को ज़कात नहीं दे सकता इसी तरह बीवी अपने शौहर को ज़कात नहीं दे सकती।

(6) गैर मुस्लिम।

(7) मालदार आदमी की नाबालिग औलाद।

इन तमाम लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं है।

प्रश्नः एक फक़ीर को ज़कात का इतना माल दिया जाए जो निसाब के बराबर या उससे ज़ियादा हो तो ज़कात अदा होगी या नहीं?

उत्तरः ज़कात अदा हो जाएगी लेकिन ऐसा करना मकरूह है।

प्रश्नः अगर किसी शख्स को मुस्तहिक़ समझ कर ज़कात दे दी, बाद में मालूम हुआ कि वह सय्यिद था या मालदार था, तो ज़कात अदा होगी या नहीं?

उत्तरः अदा हो गयी, फिर से देना वाजिब नहीं।

प्रश्नः ज़कात किन लोगों को देना अफज़ल है?

उत्तरः अव्वल अपने रिश्तेदार जैसे भाई, बहन, भतीजे, भतीजियां, भांजे, भांजियां, चचा, फूफी, खाला, मामूं, सास, ससुर, दामाद व गैरा में से जो हाजतमन्द और मुस्तहिक़ हों उन्हें देने में बहुत ज़ियादा सवाब है, उनके बाद अपने पड़ोसियों या अपने शहर या गांव के लोगों में से जो ज़ियादा हाजतमन्द हो उसे देना अफज़ल है फिर जिसे देने में दीन का नफा ज़ियादा हो जैसे इल्मे दीन के तालिब इल्म।

प्रश्नः हरमैन शरीफैन में अस्र की नमाज़ काफी पहले यानी एक ही मिस्ल पर हुआ करती है, जब कि अहनाफ के यहां अस्र का वक्त दो मिस्ल पर शुरुअ होता है, ऐसी सूरत में क्या हनफी मुक्तदियों की नमाज़ हो जाएगी, अगर वह जमाअत में शामिल हो कर नमाज़ अदा करें?

उत्तरः हनफी मसलक पर चलने वाले अगर मिस्ले अव्वल में अस्र की नमाज़ हरमैन शरीफैन में जमाअत के साथ अदा करें तो बिला शुब्हा नमाज़ अदा हो जाएगी, और जमाअत का सवाब भी मिलेगा, इमाम अबू हनीफा का अगरचे मशहूर कौल यही है कि दो मिस्ल के बाद अस्र का वक़्त शुरुअ होता है, लेकिन दूसरा कौल एक मिस्ल का भी है, तमाम आइम्मा बशमूल इमाम अबू यूसुफ रह0 व इमाम मुहम्मद रह0 इसी के काइल हैं, साहिबे दुर्रे मुख्तार अल्लामा हसकफी रह0 ने इसी कौल को राजेह करार दिया है।

(रद्दुल मुहतार अजदुर्रिमुख्तारः 2/15)

हिन्दोस्तान के उलमा में मौलाना रशीद अहमद गंगोही ने इसी पर फत्वा दिया है।

फतावा रशीदियाः 299)

प्रश्नः जो लोग नमाज़ शुरुअ होने के बाद मस्जिद आएं, आगे की सफ पूरी हो चुकी हो, तो उन्हें नई सफ में किस तरह खड़ा होना चाहिए, क्या वह दाएं जानिब से खड़े हों?

उत्तरः जो लोग बाद में आएं, नई सफ बन रही हो, लेकिन इतने लोग नहीं हों कि सफ मुकम्मल हो सके तो दरमियान हिस्सा से नमाज़ियों को खड़ा होना चाहिए, जैसे जैसे नमाज़ी आते जाएं दाएं और बाएं सफें बढ़ती जाएं, यह न हो कि बाद में आने वाले बिल्कुल दाएं तरफ खड़े हो जाएं और बाईं सफ खाली रहे। (फत्हुल बारीः 2/265)

प्रश्नः आज कल हरमे मक्की में नमाज़ की सफें मस्जिद से बाहर लग जाती हैं, खास तौर पर हज और रमज़ान के दिनों में भीड़ की वजह से ऐसा होता है, हालांकि मस्जिदे हराम के

बाहर बीच में कई कई सफों की जगह छोड़ी हुई होती है, और उसके बाद नमाजियों की सफें बन जाती हैं, क्या इस सूरत में इक्तिदा दुरुस्त होगी, और छूटी हुई जगह के बाद जो मुक्तदी होते हैं, उनकी नमाज़ हो जाएगी?

उत्तर: सफों के दरमियान फासिले के सिलसिले में मस्जिद और सहरा में फर्क है, मस्जिद के अन्दर सफों के दरमियान अगर एक दो सफ का फासिला हो तो इक्तिदा में कोई हरज नहीं है, फुकहा के नज़दीक फनाए मस्जिद भी मस्जिद के हुक्म में है, मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी के बाहर जो सहन है, वह मस्जिद के हुक्म में है इसलिए वहां दो सफों के फासिले के बावजूद इक्तिदा दुरूस्त है, अल्बत्ता सहरा या खुले मैदान में नमाज़ियों की सफें हों तो वहां दो सफों या एक सड़क या नहर के बकद्र फासिला हो तो इक्तिदा दुरुस्त नहीं है, और बाद की सफों में जो लोग होंगे, उनकी नमाज़ें नहीं होंगी।

(दुर्रे मुख्तारः 2/232)

प्रश्न: बाज़ दफा आगे सफ में जगह खाली होती है मगर वहां तक पहुंचने के लिए पिछली सफ के नमाज़ी के सामने से गुजरना पड़ता है, अगर खला को छोड़ दिया जाए तो यह भी आदाब के खिलाफ है, और नमाज़ी के सामने से गुजर कर जाया जाए तो इसकी भी मुमानियत है, ऐसी सूरत में क्या करना चाहिए?

उत्तर: अगर आगे की सफ में जगह खाली हो तो सफों के बीच से निकलते हुए आगे की सफ पूरी कर लेनी चाहिए, और यह खयाल रखना चाहिए कि सफ के किनारे से दाखिल हों, और सामने से गुजरते हुए खाली जगह को पुर करें, क्योंकि जिन लोगों ने दरमियान में खला छोड़ी है, वह उसके जिम्मेदार हैं, यही वजह है कि सफ पुर करने के लिए नमाज़ी के सामने से गुजरने वालों पर उसका गुनाह नहीं होगा।

मनीयतुल मुसल्ली व गुनीयतुल मुतमल्लीः 244)

प्रश्न: तन्हा नमाज़ अदा करने के मुकाबले में जमाअ़त से नमाज़ अदा करने की फज़ीलत बहुत ज़ियादा है, लेकिन सवाल यह है कि यह फज़ीलत पूरी नमाज़ यानी शुरुअ़ से आखीर तक जमाअ़त में शरीक़ होने से हासिल होगी, या नमाज़ के किसी हिस्सा में शामिल हो जाने से फज़ीलत हासिल हो जाएगी, बाज़ हज़रात इस मसअले में इख्तिलाफ करते हैं, सही क्या है?

उत्तर: फुकहाए अहनाफ की राय यह है कि अगर नमाज़ के एक जुज़ में भी इमाम के साथ शिरकत हो जाए तो जमाअ़त में शिरकत समझी जाएगी, और इस मुक्तदी को जमाअ़त का सवाब होगा, अल्बत्ता फर्क यह होगा कि जितनी देर इमाम के साथ शिरकत होगी, उसी लिहाज़ से अज्र व सवाब हासिल होगा, इसलिए कोशिश यह होनी चाहिए कि आदमी जल्द से जल्द नमाज़ में पहुंचे और पूरी जमाअ़त में शरीक हो और मुकम्मल सवाब हासिल करे। (कबीरी–150)

प्रश्न: एक शख्स का इन्तिक़ाल हुआ उसने अपने वरसा में दो बेटियां और एक बीवी छोड़ी उसके हक़ीक़ी भाई बहन भी हैं उसके तरके की तक्सीम किस तरह होगी?

उत्तर: वफात पाए हुए शख्स पर अगर कर्ज है तो उसके तरके से पहले कर्ज अदा करेंगे फिर अगर उसने कोई जाइज वसीयत की है तो उस को पूरा करेंगे बकीया तरके में से आठवां हिस्सा बीवी को मिलेगा और एक तिहाई (यानी 1/3, 1/3) दोनों लड़कियों को मिलेगा बाक़ी हिस्सा भाई बहनों को मिलेगा सहूलत के लिए तरके के 24 हिस्सा करेंगे उन में से 3 हिस्से बीवी पाएगी और 8,8 हिस्से दोनों लड़कियां पाएंगी बाक़ी 5 हिस्से भाई बहनों पर इस तरह तक़्सीम होंगे कि बहन को भाई का आधा मिलेगा।

प्रश्न: अस्र की नमाज़ का वक़्त जब इमाम मुहम्मद, इमाम अबू यूसुफ और एक कौल के मुताबिक़ इमाम अबू हनीफा एक मिस्ल पर मानते हैं और अल्लामा हसकफी इस को राजेह बताते हैं तो फिर क्या सबब है कि अहनाफ की सारी मस्जिदों में अस्र की अज़ान व नमाज़ मिस्लैन पर होती है?

उत्तर: अहनाफ ने इबादात में इमाम अबू हनीफा रह0 के मुहतात कौल को मुफ्ता बिही करार दिया है और मुहतात कौल यही है कि मिस्लैन के बाद ही अस्र की नमाज़ का वक़्त शुरुअ़ हो, जिन अहनाफ ने एक मिस्ल पर अस्र का वक़्त माना है वह वक़्ते जवाज़ है, वक्ते मुस्तहब सब के यहां दो मिस्ल (मिस्लैन) पर ही है।

इमाम मुहम्मद फरमाते हैं अस्र मुअख्खर कर के पढ़ना हमारे नज़दीक उससे अफज़ल है कि नमाज़ उस वक़्त पढ़ी जाए जब सूरज बहुत चमकदार हो और उस में जरदी न आई हो क्योंकि आम आसार (यानी सहाबा रज़ि0 के आसार) इसी तरह आए हैं और यही इमाम अबू हनीफा रह0 का कौल है।

(मुवत्ता इमाम मुहम्मद)

प्रश्न: वुजू करने का क्या तरीक़ है?

उत्तर: सबसे पहले पाकी के इरादे से बिस्मिल्लाह करके दोनों हाथ गट्टों तक धोएं फिर तीन बार कुल्ली करके दांत साफ करें फिर नाक के अगले हिस्से में तीन बार पानी पहंचा कर नाक साफ करें फिर पूरा चेहरा तीन बार धोएं, दाढ़ी घनी हो तो दाढ़ी में उंगलियां डाल कर दाढ़ी का खिलाल करें फिर दोनों हाथ कुहनियों समेत तीन तीन बार धोएं, पहले दायां हाथ फिर बायां हाथ फिर भीगी हथेलियों से पूरे सर का और उंगलियों से कानों का मसह करें, फिर दायां पैर टखनों समेत तीन बार धोएं फिर बायां पैर टखनों समेत तीन बार धोएं, वुजू हो गया याद रहे वुजू में चार फर्ज हैं– (1) पूरा चेहरा धोना एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक और पेशानी के बालों से ठुडडी के नीचे तक। (2) दोनों हाथ कोहनियों समेत धोना। (3) दोनों पैर टखनों समेत धोना। (4) सर का मसह करना, कम से कम चौथाई सर का मसह करना इसलिए अगर कोई उज्र हो तो पूरे चेहरे और दोनों हाथ कुहनियों समेत और दोनों पैर टखनों समेत एक एक बार धो लें और सर का मसह कर लें तो भी वुजू हो जाएगा। वुजू में जरूरत से जियादा पानी बहाना मकरूह है आज कल नल की टोटियों से वुजू किया जाता

है इसलिए उस में एहतियात की जरूरत है। बाज लोग दोनों हाथ धोने के बाद अपनी उंगलियां चूमते हैं यह न करना चाहिए।

प्रश्नः जनाबत के गुस्ल का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः पहले गटटों तक दोनों हाथ धोएं फिर बदन में जहां नजासत लगी हो उस को साफ करें जो कपड़ा पहन कर नहाएं उस की नजासत भी साफ करें फिर पाकी हासिल करने के इरादे से बिस्मिल्लाह कर के वुजू करें, वुजू करते वक़्त जब कुल्ली करें तो गरारा भी करें और नाक में पानी नथनों तक पहुंचाएं अगर रोजे से हों तो गरारा न करें न नाक में नथनों तक पानी पहुंचाएं फिर तीन बार पूरे बदन पर पानी बहाएं, जनाबत के गुस्ल में तीन फर्ज हैं पूरे बदन पर एक बार पानी बहाना, कुल्ली गरारे के साथ करना, नाक में नथनों तक पानी पहुंचाना, रोजे से हों तो सिर्फ कुल्ली करें और नाक के अगले हिस्से में पानी पहुंचाएं। ◆◇◆

नमाज़ की हक़ीक़त व .....

यहां पहुंच कर इस हक़ीक़त को याद कर लीजिए कि नमाज़ की तासीर कोई जादू और छू मंतर के क़बील की चीज़ नहीं है बल्कि इसका राज़ यही है कि नमाज़ इज़्ज़ व नियाज़ के साथ अल्लाह की याद और अल्लाह से वाबस्तगी और उसके कुर्ब का आला जरीआ़ है और इस तरह से अल्लाह की याद और उसके साथ तअल्लुक़ व वाबस्तगी आदमी को अल्लाह का महबूब और उसकी रहमतों का मुस्तहिक़ और सीरत में फिरिश्ता बना देती है और अगर कोई क़ौम और कोई उम्मत इज्तिमाई तौर पर इसको अपनी ज़िन्दगी बना ले तो अल्लाह तआ़ला उस क़ौम और उस उम्मत को दुन्या ही में अपनी खिलाफत के मन्सब पर फाइज़ करते हैं और ज़मीन व आसमान की बरकतों के दरवाजे उन पर खोल दिए जाते हैं, यह अल्लाह तआ़ला का वादा और उसकी सुन्नते मुस्तमिर्रा है, कुर्आन मजीद में आया है अनुवादः "और अल्लाह तआ़ला अपने वादे की खिलाफ वर्ज़ी हरगिज़ न करेगा" (अलहजः 47)

"आप अल्लाह के दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएंगे और न आप अल्लाह के दस्तूर को कभी मुन्तकिल होता हुआ देखेंगे"।

(फातिरः 43)

कौम और उम्मत को मन्सबे खिलाफत पर सरफराज़ कराने में नमाज़ की जो तासीर है उस के मुतअल्लिक अल्लाह का जो क़ानून है उस की कुछ तफ़्सील और तौजीह इन्शाअल्लाह आगे आएगी।

यहां तक जो कुछ अर्ज किया गया वह सिर्फ नमाज़ की अहम्मीयत और उसकी कारफरमाइयों से मुतअल्लिक़ था या नमाज़ ही के मुतअल्लिक़ तरगीबी व तरहीबी आयात व अहादीस की तशरीह थी, अब मालूम करना चाहिए कि जिस नमाज़ की अज़मत व तासीर का बयान हुआ उसकी हक़ीक़त क्या है और वह किस तरह पढ़ी जाती है। यह बयान इन्शाअल्लाह अगले अंक में आएगा। ◆◇◆

हिन्द का दस्तूर और मुस्लिम पर्सनल लॉ

—इदारा

हिन्द का दस्तूर तो आलम में यह मशहूर है
हिन्द के शहरी का हक़ दस्तूर में मस्तूर है

इंसानियत के हक़ तो इस दस्तूर में भरपूर हैं
हक़ जानवरों के भी तो इस दस्तूर में मज़कूर हैं

हैं ज़बाने बोलियां इस हिन्द में तो बेशुमार
और मज़ाहिब कल्चरों का भी तो है मुश्किल शुमार

सब ज़बानों बोलियों का हक है इस दस्तूर में
हर हुनर और इल्मो फन का हक़ है इस दस्तूर में

हिन्द की रस्मों का भी तो हक़ है इस दस्तूर में
मज़हबों और कल्चरों का हक है इस दस्तूर में

हिन्द के इन मज़हबों में मज़हबे इस्लाम है
आसमानी मज़हबों में मज़हबे इस्लाम है

इस्लाम की तालीम का हक़ है दिया दस्तूर ने
इस्लाम की तब्लीग़ का हक़ है दिया दस्तूर ने

हां नमाज़ो रोज़ा हज इस्लाम के आमाल हैं
और ज़कातो सदक़ा भी इस्लाम के आमाल हैं

ज़ब्ह कुर्बानी भी तो इस्लाम का है एक अमल
अह्ले सरवत जितने हैं वाजिब है उन पर यह अमल

अक़्दे निकाह इज़ने तलाक़ इस्लाम के आमाल हैं
आइली आमाल के यां मुंज़बित अहकाम हैं

मुस्लिम पर्सनल ला इन्हीं अहकाम का इक नाम है
हां हमारे आइली कानून का यह नाम है

दख़्ल दे इसमें कोई दस्तूर में है हक़ नहीं
हक़्के दस्तूरी किसी को छीनने का हक नहीं

हम हैं हिन्दी हिन्द के दस्तूर के पाबन्द हैं
हम हैं मुस्लिम दीन के दस्तूर के पाबन्द हैं

या ख़ुदा कर दे मदद हम दीन पर क़ाइम रहें
दस्तूर के पाबन्द रह कर दीन पर काइम रहें

जब तलक ज़िन्दा रहें क़ाइम रहें इस्लाम पर
जिन्दगी जब खत्म हो, हो ख़ातिमा ईमान पर

या ख़ुदा हर काम हो तेरी रिज़ा के वास्ते
ख़ल्क़ की खिदमत करें तेरी रिज़ा के वास्ते

हम करें कोशिश कि अनपढ़ कोई भी यां न रहे
हर कोई सीखे हुनर अच्छी कमाई वह करे

उन्स है अपने वतन से और वतन वालों से भी
उसकी प्यारी सरज़मीं से उसके गुलख़ारों से भी

पर रहेंगे दीन पर अपने यहां हर हाल में
हो अमीरी या फकीरी हर तहर के हाल में

दीन बिन यह जिन्दगी बेकार है बेकार है
दीन बिन दुन्या को तो धुतकार है धुतकार है।

जल्दबाज़ी कुर्आन व हदीस की रोशनी में

—मुहम्मद अब्दुल्लाह शमीम नदवी

अल्लाह ने अपनी तमाम मखलूक़ात में इन्सान को अशरफ और अफज़ल (श्रेष्ठतम) बनाया है, इन्सान को तमाम मखलूक़ात पर यह इम्तियाज़ ऐसे ही नहीं मिल गया बल्कि उस की अहम वजह इन्सान के आमाल के साथ जज़ा व सज़ा का मुन्सलिक होना है और दीगर मखलूक़ात के मुक़ाबले में बहुत सी सिफात का हामिल होना है।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को विभिन्न सिफात से नवाज़ा कुछ तो इन्सान और हैवान में मुशतरक हैं जैसे भूख लगना, नींद का आना, महब्बत करना और गुस्सा आना वगैरा, और कुछ सिफात में इन्सान मुम्ताज़ है जैसे सिफते तअल्लुम, (पढ़ना व पढ़ाना) तदबीर करना, ईजादात करना, वगैरा, अल्लाह तआ़ला ने इन्सानी सिफात को ऐसे सांचे में ढाला है कि वह उन्हें अच्छे और बुरे मवाके पर यक्सां इस्तेमाल कर सकता है, उन से अच्छा और बुरा दोनों तरह का काम ले सकता है, चुनांचे इन्सान को मिन जानिब अल्लाह कुछ उसूल व जवाबित दे कर उन सिफात को इस्तेमाल में आज़ादी दी गई है, अब चाहे वह उनको अच्छे काम में इस्तेमाल करे और जज़ा का मुस्तहिक़ हो जाए और चाहे तो उनको बुराई में इस्तेमाल कर के अपनी दुन्या और आखिरत का नुक्सान कर ले।

चुनांचे इन्सान की एक सिफत यह बताई गई है कि वह बहुत जल्दबाज़ वाके हुआ है अल्लाह तआला फरमाते हैं—

अनुवादः ''इन्सान जल्दबाज़ मखलूक है'' अल—इंबियाः 37) (यानी वह हर काम में जल्दबाज़ी चाहता है)।

जल्दबाज़ी ब जाते खुद कोई बुरी चीज़ नहीं है बल्कि बसा औक़ात यह मक्सूद व मतलूब (अभीष्ट) हुआ करती है जैसे किसी गुनाह के हो जाने के बाद तौबा में जल्दबाज़ी (उजलत) मतलूब है और अल्लाह के नज़दीक यही पसन्दीदा है, अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं अनुवादः ''अपने रब की मगफिरत और उसकी उस जन्नत की तरफ एक दूसरे से जल्दी पहुंचने की कोशिश करो जिस की वुसअ़त आस्मान और ज़मीन है''।

(आले इमरानः 133)

नमाज़े जुमा के तअल्लुक़ से भी जल्दबाज़ी का हुक्म है, अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं अनुवादः ''ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन जुमा की नमाज़ के लिए अज़ान दी जाय तो फौरन अल्लाह के ज़िक्र की तरफ तेज़ी से चल पड़ो और खरीद व फरोख्त को छोड़ दो, अगर तुम समझ रखते हो तो यह तुम्हारे लिए बहुत नफे की चीज़ है''। (अल जुमाः 9)

इस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कारे खैर में पहल करने का हुक्म दिया

है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवादः ''अच्छे काम करने में जल्दी किया करो''।

(मुस्लिमः 169)

यह आयाते कुर्आनी और हदीस शरीफ हमें बता रही है कि जल्दबाजी अपनी ज़ात में बुरी सिफत नहीं है बल्कि बाज जगह देर करना बुरा होता है लेकिन कुछ जगहें ऐसी भी हैं जहां जल्द बाजी अल्लाह तआला को बहुत ना पसन्द है और ऐसी जगहों पर अल्लाह ने इन्सान को अपनी इस सिफत को कन्ट्रोल करके सब्र व तहम्मुल से काम लेने का हुक्म दिया है।

आम तौर से इन्सान की आदत है कि वह सुनी सुनाई बातों की तहक़ीक किए हुए बगैर जल्द बाजी में फैला देता है, हमें कभी कोई ऐसी ख़बर सुनने को मिलती है जिसका तअल्लुक हमारे जज़बात से होता है।

उस वक़्त हमारा दिल बे काबू हो जाता है और हमें मजबूर करता है कि जल्द अज़ जल्द यह बात दूसरों तक पहुंचाएं और हम अपने जज़बात की रौ में बह कर बिना जांच पड़ताल के उसे आगे बढ़ा देते हैं जो कभी कभार हमारे और दूसरे लोगों के लिए ऐसे नुक्सान का सबब बन जाती है जिस की तलाफी हम चाह कर नहीं कर सकते।

कुर्आन पाक ने बे तहक़ीक़ की बातें फैलाने से सख़्ती से मना किया है अल्लाह तआ़ला ने फरमाया अनुवादः ''ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई गैर मोतबर शख्स कोई खबर ले कर आए तो उसकी जांच पड़ताल कर लो, कभी तुम किसी कौम को अन्जाने में कोई नुक्सान न पहुंचा दो और फिर अपनी इस हरकत पर नज़रें उठाने के लाइक न रहो।'' (अल–हुजुरातः 6)

आप अपने अतराफ का जाइज़ा लीजिए कि दिन भर में कितनी मनगढंत बातें बिला तहक़ीक़ आगे बढ़ा दी जाती हैं, और उनकी जांच पड़ताल के तअल्लुक़ से हम सोचना भी गवारा नहीं करते, क्या आप जानते हैं कि हमारे मुल्क हिन्दोस्तान में होने वाले जियादातर फसादात उन्हीं अफवाहों की देन हैं जो अब तक हजारों जिन्दगियां तबाह कर चुकी हैं।

यह तो इज्तिमाई जिन्दगी के नुक्सान की एक झलक है लेकिन अगर हम अपनी इनफिरादी (व्यक्तिगत) जिन्दगी में भी जाइजा लें तो घरेलु मुआशरती और खान्दानी हर तरह का नुक्सान हमारी जल्द बाजी के सबब होता है।

इसलिए आजकल सोशल मीडिया (फेस बुक वगैरह) के सारफीन की यह बड़ी जिम्मेदारी है कि वह किसी भी मैसेज को पोस्ट या वीडियो को बिला तहक़ीक़ हरगिज न फैलाएं, वरना हमारी यह नादानी हमें और दूसरों को किसी नाकाबिलेतलाफी नुक्सान से दो चार कर सकती है, इसी तरह उजलत पसन्दी जिन कामों में अल्लाह को नापसंद है उनमें से एक बद गुमानी है, यानी किसी के बारे में अपने दिल में ग़लत खयाल रखना।

आज जरा गौर कीजिए कि यह बीमारी भी किस क़दर हम में रच बस गई है कि हमें इस की संगीनी का एहसास तक नहीं हो पाता, हम किसी शख्स के किसी एक अमल को देख कर बल्कि उसके मुतअल्लिक़ कोई एक बात सुन कर ही उस से बदगुमान हो जाया करते हैं, और फिर उसके बारे में अपना एक फरज़ी नजरीया काइम कर के सारी जिन्दगी उसी नज़र से उसे देखा करते हैं, जब कि अपने बारे में हमारी ख्वाहिश होती है कि लोग हमेशा हम से खुश गुमान रहें, अल्लाह तआ़ला ने इस क़द्र जल्दी गुमान काइम करने वालों को सख़्त नोटिस दिया है फरमाया, अनुवाद– ''ऐ ईमान वालो! जियादा गुमान करने से बचो, क्योंकि बाज गुमान गुनाह होते हैं।''

(अल हुजुरातः 12)

बदगुमानी इन्सानी मुआशरे का वह नासूर है जो आहिस्ता आहिस्ता महब्बतों को खत्म कर के नफरतों को जन्म देता है, इसी लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस से बचने का सख्ती से हुक्म दिया है ।

अनुवाद– ''तुम लोग बुरे गुमानों से बचते रहो, क्योंकि बदगुमानी से बढ़ कर कोई झूठी बात नहीं है''। (बुखारी)

हमेशा याद रखिए अपने किसी भाई बहन के तअल्लुक से फौरन बदगुमान होने से बचिये, पहले अच्छी तरह उस को देख परख लीजिए। बहुत मुम्किन है कि आप खुद ही ग़लती पर हों, आप खुद सोचिए क्या आप उस बात को गवारा करेंगे कि कोई आप की नाकरदा खता पर आप से बदगुमान हो जाए? तो फिर यही मेयार (मापदन्ड) हम अपने ही भाई के सिलसिले में क्यों नहीं रखते?।

चुनांचे उलमा फरमाते हैं कि दिल का सुकून और जिन्दगी की हक़ीकी खुशी चाहते हो तो अपने भाईयों के साथ हुस्ने जन रखना सीखो क्यों कि बदगुमानी करने वाले से जेहनी सुकून छीन लिया जाता है।

खुलासा यह है कि इन्सान को अपनी वदीअत करदा सिफात का इस्तेमाल मुसबत अन्दाज से करना चाहिए इसलिए अच्छे और नेक कामों में जल्दबाजी से काम लीजिए, और जिन जगहों पर अल्लाह तआ़ला ने हमें जल्दबाजी को काबू में करने का हुक्म दिया है, जैसे सुनी सुनाई बातों को बिला तहक़ीक़ फैलाना, किसी के तअल्लुक़ से बुरा गुमान करना, और बेजा गुस्सा से काम लेना इन जैसी जगहों पर निहायत सब्र व तहम्मुल से कदम उठाया कीजिए, जल्दी ही आप देखेंगे कि एक पुरसुकून और खुशगवार मुआशरा वजूद में आ चुका है, हम चाहें तो खुद को आज से ही बदल सकते हैं। क्योंकि अगर हम कुछ करने की ठान लें तो हमें भला कौन रोक सकता है?

तो आइये! एक नई खुशगवार जिन्दगी की शुरुआ़त करें, यक़ीन जानिए इन उसूलों पर अमल कर के हम इन्दल्लाह महबूब बन जाएंगे और लोगों के दरमियान भी हमारी पहचान एक मोतबर और नेक इन्सान के तौर पर होगी।

❖❖❖

अल्लाह वाले

—इदारा

अल्लाह वाले अल्लाह वाले
अल्लाह वाले रब के प्यारे

रब की याद में रहते हैं वह रब की इबादत करते हैं वह
रब से महब्बत रखते हैं वह रब से अपने डरते हैं वह
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

नबी से अपने रखते महब्बत नबी की अपने करते इताअ़त
शिर्क से रखते पूरी नफ़रत नहीं वह करते कोई बिदअ़त
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

ख़ल्क़ की खिदमत करते हैं वह ख़ल्क़ के खादिम रहते हैं वह
बुरों से नफ़रत रखते हैं वह भलों से उलफत रखते हैं वह
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

मेहनत कर के रोज़ी कमाते खुद खाते गुरबा को खिलाते
यही सबक़ औरों को पढ़ाते हर इक को वह नेक बनाते
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

नशे से खुद को दूर वह रखते नशे से सब को दूर वह रखते
रोज़ सवेरे वरज़िश करते वरज़िश करना सब को सिखाते
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

अनपढ़ पाते इल्म सिखाते भटका पाते राह दिखाते
हुनर सीखते और सिखाते पसमांदा को आगे बढ़ाते
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले रब के प्यारे

पाएं दौलत ना इतराएं आए ग़ुरबत ना घबराएं
आए मुसीबत सब्र अपनाएं आए मसर्रत शुक्र अपनाएं
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

साफ सफाई खूब वह रखते दुर्गन्धित मुख कभी न रखते
शौचालय में शौच वह करते कपड़े उनके साफ ही दिखते
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

चुग़ली ग़ीबत किज़्ब से नफरत जुहदो कनाअ़त सिद्क से उलफत
बड़ों की इज्ज़त छोटों पे शफ़्क़त हर इन्सां की करते इ़ज़्ज़त
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

दुष्कर्मों से दूर वह रहते ईश नियम पर शादी करते
बच्चा या बच्ची वह पाते दोनों को वह इल्म पढ़ाते
ऐसे होते अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

सारे सहाबा अल्लाह वाले अतबाअ़ उनके अल्लाह वाले
दुआ़ हमारी या रब सुन ले हमें बना दे अल्लाह वाले
हम भी बनेंगे अल्लाह वाले
अल्लाह वाले अल्लाह वाले

कुर्आन व हदीस में क़ियामत तक मसाइल का हल मौजूद

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

दुन्या में जो भी काम हो रहे हैं वह ज़ाहिर में सब असबाब के तहत होते हैं, लेकिन ये असबाब असल में हुक्मे इलाही के तहत होते हैं, कोई भी काम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुक्म के बग़ैर नहीं हो सकता, और ये सब पहले तय किया जा चुका है, अन्दरूनी तौर पर वह सब मुक़र्ररा निज़ाम के तहत मुअय्यन है, बारीक से बारीक चीज़ भी अल्लाह तआ़ला के यहां मुक़र्रर शुदा है, असबाब और वक़्त भी मुकर्रर है। इसी के साथ ये भी हक़ीक़त है, कि अल्लाह खालिक़े कायनात है और कोई भी काम बग़ैर मक़सद के नहीं होता, वह इन्सान से भी कोई काम करवाता है तो उसका मक़सद होता है, उसके करने का इख्तियार भी अल्लाह तआ़ला ने ही इन्सान को दिया है। अल्लाह तआला ने फरमाया कि यह दीन जो अल्लाह तआ़ला ने अपने आखरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए इन्सानों को दिया, उसको मुकम्मल करके उसमें किसी तरह का नुक़्स नहीं रखा, उसमें किसी भी तरह की तबदीली की गुन्जाइश नहीं, और जब अल्लाह तआ़ला ने ये बात कह दी कि दीन मुकम्मल हो गया, तो इन्सान को किसी तरह का हक़ नहीं हासिल कि वह ये कहे कि दीन अभी ना मुकम्मल है।

हालात चाहे जितने ही बदल जाएं, तमद्दुन कितना ही तरक़्की कर जाए, दुन्या अपने किसी भी उरूज को पहुंच जाए, और इन्सान तरक़्की की कितनी ही मंजिल तय कर ले लेकिन इस शरीअ़त में किसी भी तरह की तबदीली की गुन्जाइश नहीं, और न उसकी ज़रूरत है, क्योंकि उसमें क़ियामत तक के आने वाले मसाइल की रिआ़यत रखी गई है, और ऐसी किसी ज़रूरत का मौक़ा महसूस किया जाए तो उसके लिए असबाब पहले से मुक़र्रर कर दिये गये हैं अल्लाह तआ़ला ने मुहद्दसीने इज़ाम को खड़ा किया है जिन्होंने अपनी पूरी पूरी उम्रें लगा दीं और अपनी पूरी जिन्दगी को इस दीन के लिए वक़्फ़ कर दिया और नये नये मसाइल पर ग़ौर किया कुर्आन व सुन्त को अपना माख़ज़ बनाया और हर सवाल का हल उनसे अख़ज़ करके बताया इस तरह हर दौर में फिक़्ह की तदवीन की, तारीख़ में इसकी बहुत मिसालें हैं।

मौजूदा दौर में भी जब तकाज़ा होता है तो अल्लाह तआ़ला ऐसे हज़रात को खड़ा कर देता है जो कुर्आन और हदीस से इस्तिफादा कर के तकाज़ा का हल पेश करते हैं और वक़्त के जदीद मसाइल का इस्तिखराज करते हैं और

शेष पृष्ठ....38 पर

दअ़वत का काम करने वालों के लिए एक उसूली हदीस

—मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

यह उम्मत उम्मते दअ़वत है अपनों में, गैरों में इस्लाह व दअ़वत का काम इसकी जिम्मेदारी है। अल्लाह ने इसको इसी लिए बर्पा किया है कि आलमे इंसानियत को यही पैग़ाम दे, गिरते हुओं को संभाले, डूब्तों को सहारा दे, जो जहन्नम के किनारे पहुंच चुके उनको जहन्नम की आग से डराये, ईमान की ह़क़ीक़त लोगों के सामने रखे और दुन्या के लिए नजात दहिन्दह साबित हो।

ख़ातिमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सारी जिन्दगी इसी काम में गुज़ारी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेचैनी व बेकली को कुर्आन मजीद में बार बार बयान किया गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दअ़वत की अहमियत भी बयान फरमाई और उसका तरीक़ा भी बताया और सबसे बढ़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत पूरी उम्मत के लिए हर बाब में ऐसा नमूना है जो हर जगह के लिए और क़यामत तक के लिए है।

दअ़वत के मैदान में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरज़े अमल क्या था। उसकी तफसीलात अहादीस व सीरत की किताबों में भरी पड़ी हैं। उन्हीं अनमोल ख़ज़ानों में एक हदीस हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से मनकूल है जो इस बाब के लिए शाह कलीद है, इसमें हिकमत दअवत और उसूले दअवत के सिलसिले में यह हक़ाइक़ बयान किये गये हैं कि अगर एक दाअ़ी व मुसलिह उनका ख्याल रखे तो रास्ते खुलते जाएं और दुन्या की यह प्यासी क़ौमें जो आबे हयात के लिए तरसां हैं जिनके दिलो दिमाग़ तक अब भी ईमान के दिलनवाज़ झोंके नहीं पहुंच सके, शायद यह जज़्बा दअ़वत हिकमत व तरबियत के साथ हमारे नौजवानों में उभर आए तो क्या बईद है कि बादल छट जाएं, पहले हदीस मुलाहिजा कीजिए।

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि0 को यमन भेजा तो उनसे फरमाया तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो अहले किताब हैं, लिहाज़ा तुम उनको सबसे पहले खुदा को एक मानने की दअ़वत देना जब वह उसको समझ लें तो उनको बताना कि अल्लाह तआ़ला ने दिन रात में पांच नमाज़ें फर्ज़ की हैं। मदीना मुनव्वरह तशरीफ आवरी के बाद जब हालात साज़गार हो गये तो जहां जहां से तक़ाज़े आए और जहां जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जरूरत महसूस की, उन इलाक़ों में सहाबा किराम को भेजा और जाने वालों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां के हालात के एअ़तिबार से नसीहतें भी फरमाईं। मज़कूरा हदीस जो कि हज़रत

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से मरवी है जिस में हज़रते मुआ़ज के यमन भेजने का तज़किरा है। हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि0 जलीलुल क़द्र सहाबी हैं उनके बारे में खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात इरशाद फरमाई कि यह हलाल व हराम के सबसे ज़ियादा जानने वाले हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको यमन भेजा था। जिस वक़्त वह तशरीफ ले जा रहे थे उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे नसीहत के तौर पर यह बात फरमाई कि तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो अहले किताब हैं और अहले किताब का मसला यह है कि वह शिर्क में मुबतिला हो चुके हैं, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सबसे पहला मरहला तो यह है कि तुम उनको तौहीद की दअ़वत देना, तौहीद की तरफ बुलाना जो हर चीज़ की बुन्याद है अ़क़ाइद की बुन्याद है और उसके बाद आ़माल की बुन्याद भी है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस नसीहत में उनको हिकमत की एक बात बताई जिसका समझना एक दाअ़ी के लिए निहायत ज़रूरी है। इस हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दअ़वत की हिकमत का तरीक़ा मालूम होता है कि आदमी कहीं भी जब दअ़वत की बात कहे तो उसमें तदरीज व तरतीब इख्तियार करे। सारी बातें एक साथ पेश न की जाएं। उसकी वजह यह है कि जो नामानूस बातें होती हैं उनका फौरन क़बूल कर लेना मुश्किल होता है। लेकिन जब आदमी मानूस हो जाता है तो उनका क़बूल करना आसान होता है। इस लिए तमाम दअ़वत का काम करने वालों के लिए यह एक उसूली बात है, चाहे कोई शख्स मुशरिकीन में काम करे, अहले किताब में काम करे या मुसलमानों में काम करे। जो लोग भी इस्लाह व दअ़वत का काम करते हों, उनको चाहिए कि इस हदीस को अपना उसूल बनायें और इसी के मुताबिक़ दअ़वत का काम करें।

❖❖❖

कुर्आन व हदीस में .....

और वह कुर्आन व सुन्नत से ही अख़ज़ करते हैं और दीन के मुकम्मल होने की वजह से मतलूबा हल इसी में मिल जाता है, कुर्आन व हदीस के जिन नुसूस को अइम्मा किराम ने अपने सामने रखा और उनसे मसाइल को हल किया उन्हीं के तरीक़े से मौजूदा मुआ़मलात को हल करने की जरूरत है। अगर कोई यह समझता है कि फलां मसला हल नहीं होगा और उसके लिए शरीअत में तब्दीली की जाएगी, वह ना कुर्आन व हदीस के मज़ामीन से वाक़िफ है ना कि उसूल व ज़वाबित से वाक़िफ़ है, क्योंकि कोई भी मसला चाहे वह कितना दक़ीक़ हो उसका हल कुर्आन व हदीस से निकाला जा सकता है, क्योंकि यह दीन क़यामत तक के लिए है और इसमें क़यामत तक आने वाले मसाइल का हल निकाला जा सकता है।

❖❖❖

शहद (मधु)

—प्रस्तुतिः हुसैन अहमद

शहद ग़िज़ा भी है और दवा भी, यह ग़िजाईयत (आहार) के लिए बड़े काम की चीज़ है, चीनी के मुकाबले में जल्द हज़म होता है, दूध में मिला कर पीने से पूरी ग़िज़ा की हैसीयत रखता है, बदन की परवरिश करता है और उस में कूवत व हरारत पैदा करता है, खाना खाने के बाद एक चममच शहद चाट लेने से खाना हज़्म होने में मदद मिलती है। नाश्ते में उसे रोटी के साथ खा सकते हैं गर्मियों में उसका शरबत बना कर नेबू का रस शामिल कर के पी सकते हैं। बदन में ताक़त पैदा करने के अलावा यह गर्मी की सख्ती से भी बचाता है और गर्मियों में सख्त मेहनत के बाद की थकान को दूर करने और जिस्म में नये सिरे से ताक़त पैदा करने के लिए लाजवाब असर रखता है सर्दियों में चीनी के बदले दूध या चाय में मिला कर पीने से बदन में कूवत और गर्मी पैदा करता है। बच्चों, जवानों और बूढ़ों सब के लिए यक्सां मुफीद है।

दवा के एतिबार से भी शहद अच्छी चीज़ है, चुनांचे फालिज व लक्वा में इब्तिदाई चार दिन तक खालिस शहद बीस ग्राम, पानी 120 ग्राम में जोश देकर (उबाल कर) सुब्ह व शाम पिलाते हैं और उसके सिवा कोई गिज़ा नहीं दी जाती उस के इस्तेमाल से मरीज की कूवत काइम रहती है।

बकरी के ताज़ा दूध 250 ग्राम में खासिल शहद 30 ग्राम मिला कर रोजाना सुब्ह को पियें और रोजाना थोड़ा थोड़ा दूध और शहद बढ़ाते रहें, यहां तक की एक लीटर तक पहुंच जाए इस से कब्ज़ दूर होता है और खून साफ हो जाता है। और साथ ही बदन में ताक़त आती है और उसकी परवरिश होती है।

शहद ज़ख्म की हर किस्म की गन्दगी को दूर करता है। चुनांचे सुहागा 250 मिली ग्राम (दो रत्ती) शहद 10 ग्राम में मिला कर मुंह में लगाने से मुंह के जख्म अच्छे हो जाते हैं अगर मुंह से बदबु आती हो तो वह भी दूर हो जाती है।

बच्चे के दांत निकलने में दिक़्क़त हो, मसूढ़े सूजे हुए हों तो सुहागा शहद में मिला कर मसूढ़ों पर मलने से सूजन दूर हो जाती है और दांत जल्द निकल जाते हैं।

शहद 100 ग्राम में मुलेठी 20 ग्राम, सुहागा भुना हुआ 10 ग्राम पीस कर मिलाएं और पांच पांच ग्राम दिन में दो तीन बार चाटें खांसी के लिए मुफीद है।

गले सड़े जख्मों पर शहद लगाने से ज़ख्म मैल कुचैल से साफ हो कर जल्द अच्छा हो जाता है।

नीम के हरे पत्ते 20 ग्राम, सुहागा 3 ग्राम, शहद 20 ग्राम पानी 200 ग्राम में उबाल कर छान लें और उस पानी से कान को पिचकारी से धोएं कान पीप व गैरा से साफ हो जाएगा।

खालिस शहद सलाई से आंखों में लगाएं, आंखों के साफ करने और बीनाई को बढ़ाने क लिए मुफीद है।

शेष पृष्ठ....41 पर

हकीम मौलाना अब्दुल्लतीफ़ साहब कास़मी रह०

एक मुख़्लिस दाई

—जमाल अहमद नदवी

महान दाई मौलाना अब्दुल्लतीफ साहब कासमी सुल्तानपुर के मुसलमानों को सोगवार छोड़ कर अपने मालिके हक़ीक़ी से दिनांक 26.12.2017 को बच्चों को तालीम देते हुए जा मिले इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मौलाना ने 88 वर्ष की आयु पाई।

आप जहां एक तरफ़ महान आलिमे दीन थे वहीं दावतो तब्लीग़ की सर्गिमियों को अपना ओढ़ना बिछौना बना लिया था और आपकी इसी दिलचस्पी को देखते हुए सुल्तानपुर व प्रतापगढ़ के तब्लीगी जमाअत के सदस्यों ने आप को अपना अमीर भी बना लिया था। वह बड़े मुत्तक़ी व परहेज़गार थे अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक और परेशानियों पर सब्र व शुक्र आपका खास गुण था। आप हर तब्क़े और हर मसलक के लोगों में बराबर सम्मान की नज़र से देखे जाते थे।

तालीमः-

मौलाना की प्राइमरी व जूनियर स्तर की अरबी तालीम मदरसा काफियतुल इल्म पाईप रोड़ प्रतापगढ़ में हुई, मौलाना के अहम उस्तादों में मौलाना हसन मुजतबा और मौलाना किफायतुल्लाह साहब थे।

आप प्रतापगढ़ के बाद मजाहिरे उलूम सहारनपुर चले गये परन्तु किसी कारण वश पढ़ाई बीच में ही छोड़ कर घर वापस आना पड़ा, उसके बाद अगले वर्ष दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ में दाखिला लिया और एक साल यहां तालीम हासिल की। उनके मशहूर उस्तादों में मौलाना हबीबुर्रहमान साहब सुल्तानपुरी, मौलाना अब्दुल माजिद साहब, मौलाना असबात साहब, मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी (मोहतमीम दारुल उलूम नदवतुल उलमा) और हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी हसनी नदवी (नाजिम नदवतुल उलमा लखनऊ) हैं।

चूंकि दरसे निजामी की उच्च स्तर की किताबें पढ़ कर आप नदवा आये थे इसलिए जिस क्लास में आप का एडमीशन हुआ उसमें आप का दिल न लगा और एक साल गुज़ार कर देवबन्द चले गये और आलमीयत की डिग्री प्राप्त की। उस के बाद देवबंद से ही दो साला हिकमत की तालीम मुकम्मल की। लेकिन नदवे से मौलाना ने बराबर तअल्लुक़ रखा। और अपने एक साहबजादे अब्दुल वहीद को नदवे पढ़ने के लिए भेजा, वह मौलाना बिलाल हसनी नदवी के सहपाठी थे उनका पढ़ाई के दौरान ही देहान्त हो गया था।

आप का इस्लाही तअल्लुक हज़रत शैखुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब रह0 से था।

अपनी तालीम पूरी करने के बाद सबसे पहले हापुड़ में मदरसा हुसैनिया में पढ़ाना शुरु किया, दो साल तक पढ़ाया, फिर शिक्षण कार्य छोड़ कर मुम्बई चले गये। हज़रत शैख रह0 ने एक मर्तबा जवाबी खत में लिखा शिक्षण

कार्य छोड़ कर मुम्बई जाने पर मुझे बहुत अफसोस हुआ, एक पेड़ के नीचे पढ़ने पढ़ाने का मौका मिल जाये और सूखी रोटी मयस्सर आ जाये यह मुझे हर चीज़ से जियादा पसंद है इस खत के असर से आप ने मुंबई छोड़ दिया और सुलतानपुर के मदरसा जामिया इस्लामिया में दोबारा पढ़ाना शुरु किया, लेकिन थोड़े दिनों के बाद ही वहां से भी इस्तीफा दे दिया और अलग हो गये और मतब शुरु कर दिया और जब तक सिहत रही वह खुद मतब पर मरीजों को देखते रहे और साथ ही साथ दावत व तबलीग़ से वाबस्ता हो गये और इसी काम को अपना ओढ़ना बिछौना बना लिया और ना सिर्फ सुल्तानपुर बल्कि प्रतापगढ़ को अपनी सेवाओं से लाभांवित किया। अपनी सेवाओं की वजह से ही हर वर्ग में लोक प्रिय थे।

मौलाना मरहूम ने सुलतानपुर के एक छोटे से गांव ग्राम खजुरी में सन् 1929 में आंखें खेलीं और अपनी तालीमी और दावती सरगर्मियों से इस गांव को बहुत लाभांवित किया, यहां प्राइमरी स्कूल, इण्टर कालेज और छात्र–छात्राओं के अलग अलग तालीमी संस्थान स्थापित किये और अपनी उम्र की आखरी सांसों तक इन सभी संस्थानों के अध्यक्ष और संरक्षक रहे।

आपने अपने पीछे एक भरा परिवार छोड़ा है जिस में दो बेटे और एक बेटी और आपकी बेवा शामिल हैं।

अल्लाह से दुआ है कि उनको जन्नतुल फिरदौस में आला मकाम अता फरमाये और उनके अहले खाना को सब्रे जमील अता फरमाये और उनके बेटे मुफ्ती अब्दुल रशीद कासमी को उनके कामों का सच्चा जानशीन बनाये और बांशिंदगाने सुलतानपुर व प्रतापगढ़ को उनका बदल अता फरमाये।

आमीन!

◆◇◆

शहद (मधु) ....

शहद और प्याज़ का रस दो दो बूंद आपस में मिला कर सुब्ह व शाम आंख में टपकाएं या सलाई से लगाएं यह रतौंधी, धुन्ध और खुजली के लिए मुफीद है।

नोटः आँखों में वही शहद इस्तेमाल करें जो अपने सामने छत्ते से निचोड़ा गया हो वरना नुक्सान हो सकता है।

(''देहाती मुआ़लिज'' से ग्रहीत)

❖❖❖

विश्व (काइनात) में .....

की बस्ती के लिए बनाया और इसी लिए पृथ्वी के बनाने में विशेष एहतमाम फरमाया जैसा कि निम्नलिखत आयत मुबारका में वर्णित है।

''आप फरमा दीजिए कि क्या तुम उस ईश्वर का इन्कार करते हो और दूसरों को इसके समान समझते हो। जिस ईश्वर ने पृथ्वी को 6 दिन में रच दिया। वही सारे लोगों का पालन हार रब है। उसने पृथ्वी को अस्तित्व में लाने के बाद उस पर पर्वतों को स्थापित किया और उसमें बरकतें (मानव की तमाम आवश्यकताएं) रख दी हैं उसके अन्दर सब ईश्वर से मागने वालों के लिए उनकी इच्छा एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ठीक ठीक खाद्य पदार्थ और अन्य आवश्यक वस्तुएं दी हैं। यह सब काम चार दिनों में हुआ'' इस प्रकार 6 दिनों में सिर्फ एक पृथ्वी की रचना की जो कि हमारी पृथ्वी है।

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

अच्छे बच्चों के लिए कुछ शिक्षाएं

1. सुब्ह को सूरज निकलने से काफी पहले उठो।

۱۔صبح کوسورج نکلنے سے کافی پہلے اٹھو۔

2. जिस का सामना हो उसको अदब से सलाम करो।

۲۔جس کا سامنا ہواسکوادب سے سلام کرو۔

3. पाख़ाना पेशाब से फारिग़ हो कर वुज़ू करो।

۳۔پاخانہ پیشاب سے فارغ ہوکروضوکرو۔

4. मस्जिद जा कर फज्र की नमाज़ अदा करो।

۴۔مسجد جا کر فجر کی نماز ادا کرو۔

5. थोड़ी देर कुर्आने मजीद की तिलावत करो।

۵۔تھوڑی دیر قرآن مجید کی تلاوت کرو۔

6. कम से कम बीस मिनट कोई वर्ज़िश करो।

۶۔کم سے کم بیس منٹ کوئی ورزش کرو۔

7. तेज़ चलना या दौड़ना अच्छी वर्ज़िश है।

۷۔تیز چلنا یا دوڑنا اچھی ورزش ہے۔

8. नाश्ता कर के स्कूल जाने की तैयारी करो।

۸۔ناشتہ کرکے اسکول جانے کی تیاری کرو۔

9. स्कूल में अपने उस्तादों का पूरा अदब करो।

۹۔اسکول میں اپنے استادوں کا پورا ادب کرو۔

10.उस्ताद जो सबक़ पढ़ायें ध्यान से पढ़ो और उसे याद रखो।

۱۰۔استاد جو سبق پڑھائیں دھیان سے پڑھو اور یاد رکھو۔

11. हमेशा साफ सुथरे रहो।

۱۱۔ہمیشہ صاف ستھرے رہو۔